हँसती दुनिया
शिक्षक दिवस

हँसती दुनिया

वर्ष 50 • अंक 09 • सितम्बर 2023 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु
एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,
ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
10. सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन
12. चित्रकथा
24. क्या आप जानते हैं?
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
48. आपके पत्र मिले
50. रंग भरो

हँसती दुनिया

कहानियां

6. अन्न का आदर करें
– जैकी दुल्हानी

8. मन्नू और मिट्ठू की मित्रता
– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

20. सबसे जहरीला कौन?
– रेनू सैनी

26. ठगी महंगी पड़ी
– दीपांशु जैन

30. लिंकन का दृढ़ संकल्प
– नेहा नागपाल

32. घड़े से निकला बच्चा
– सुरेश सौरभ

33. बुद्धि का कमाल
– डॉ. अर्चना जैन

39. मानव की कहानी
– शिवचरण मंत्री

46. स्वावलम्बी बालक
– डॉ. जयन्त निर्वाण

कविताएं

7. रंग–बिरंगी धरती
– डॉ. परशुराम शुक्ल

18. चिड़िया
– मीनू सिंह

19. मोर
– रामअवध राम

25. पेड़ लगाओ
– डॉ. रामनिवास 'मानव'

25. मेरी बगिया में
– श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

31. हरी सब्जियां खाएं
– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

31. भूल ना जाना
– महेन्द्र सिंह शेखावत

47. तारे
– अमृत 'हरमन'

47. आसमान से
– रंजना चौधरी

विशेष/लेख

11. सबका साथी सुलेख 'साथी'
– विमलेश अहूजा

16. बन्धन कच्चे धागों का
– प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

22. क्या होती है? विश्व धरोहर
– विद्या प्रकाश

28. एक अद्भुत जीव– बीवर
– अंकुश जैन

42. पर्यावरण और वृक्ष
– अंकुश्री

सबसे पहले

शिक्षा या आचरण

आज कक्षा में शिक्षक दिवस मनाया जा रहा है। जैसे ही शिक्षक कक्षा में आए सभी विद्यार्थियों ने उनका उत्साह से अभिनन्दन किया और शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं दीं। तत्पश्चात् शिक्षक महोदय ने बच्चों से पूछा– 'ज्ञान उत्तम है या हमारा आचरण।' अधिकतर विद्यार्थियों ने ज्ञान कहा और कुछ ने आचरण को कहा सब बच्चों की बात सुनने के पश्चात् अध्यापक जी ने कहा– मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।

कहानी का नाम आते ही सभी विद्यार्थी प्रसन्न हो गए और उत्सुकता से सुनने के लिए तैयार हो गए।

शिक्षक ने कहना प्रारम्भ किया– एक बार एक राजा ने अपने राजपुरोहित से यही प्रश्न पूछा था कि ज्ञान एवं आचरण में क्या उत्तम है? राजपुरोहित ने कहा– कुछ दिन बाद मैं इसका उत्तर दे पाऊँगा। उस दिन के बाद राजपुरोहित राजा के खजाने में गया और एक थैली सोने के सिक्के लेकर चला गया। वहाँ का खजांची राजपुरोहित को कुछ नहीं कह सका क्योंकि राजा उसका बहुत सम्मान करता था और उसकी हर बात मानता था। यह सोने के सिक्के ले जाने का सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। एक दिन खजांची से रहा नहीं गया और उसने सारी बात राजा को बता दी। अगले दिन जैसे ही राजपुरोहित दरबार में आया तो राजा ने उसका सम्मान नहीं किया बल्कि उपेक्षित नज़रों से, क्रोध और ऊँची आवाज में राजपुरोहित से पूछा– क्या तुमने हमारे खजाने से सोने के सिक्के लिए हैं?

इसका राजपुरोहित ने हाँ में जवाब दिया। राजा ने यह सुनकर बहुत भला–बुरा कहा, तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं है फिर भी इस तरह का आचरण क्यों? आपको अपनी इज्जत, गरिमा और शिष्टाचार की भी चिन्ता नहीं रही।

इस पर राजपुरोहित ने कहा– यही आपके प्रश्न का उत्तर है, महाराज। आपने ही पूछा था कि ज्ञान एवं आचरण में क्या उत्तम है?

प्यारे साथियों! राजपुरोहत को सोने के सिक्के उठाने से पहले भी ज्ञान था और उसको उठाने के बाद भी ज्ञान है। परन्तु ज्ञान को केवल ज्ञान तक ही सीमित रखना भी तो कोई सार्थक बात नहीं, जब तक वह हमारे व्यवहार का हिस्सा न बन जाए। इसी तरह अगर हमें मालूम है कि किसी की वस्तु को बिना अनुमति के लेना गलत है। फिर भी ले लेते हैं तो इसमें हमारी ही गलती मानी जाएगी। कई बार हमारा आचरण केवल मुखौटा ही होता है सामने कुछ और बाद में कुछ और परन्तु जब हमसे भी उसी तरह का व्यवहार किया जाता है तो हम उसे गलत की संज्ञा दे देते हैं।

साथियो, हर व्यक्ति चाहता है कि उसका समाज में, आस–पड़ोस में यथायोग्य सम्मान हो, इज्जत हो, मर्यादा से बात हो, उसकी इज्जत बनी रहे इसलिए हमें भी अपने सभ्य आचरण से ही सबको शिक्षा देनी है। तभी हमारा ज्ञान व्यावहारिक रूप में किसी के जीवन में खुशबू फैला सकेगा। हम सम्मान, इज्जत की किसी से मांग नहीं कर सकते। परन्तु अपने व्यवहार से इन्हें प्राप्त कर सकते हैं। यह हमारी विद्या, ज्ञान, धन आदि से भी एक कदम ऊपर होती है। इसलिए हम सबको एक नम्र, मृदुभाषी, सभ्य एवं अच्छा नागरिक बनना है। इसी से सारे समाज में परिवर्तन आ पाएगा। हम सभी अपनी–अपनी जिम्मेदारी को समझें और अपनी शिक्षा एवं योग्यता के साथ–साथ अपने व्यवहार को भी खूबसूरत बनाएं।

इसी के साथ आप सभी को शिक्षक दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं कि हम हर पल, हर क्षण उत्तम शिक्षा ही ग्रहण करें क्योंकि ज्ञान एक शक्ति है और आचरण उसकी अभिव्यक्ति।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 281

गुरसिखां तों मैं बलिहारी जिन्हां प्रीत निभाई ए।
गुरसिखां तों मैं बलिहारी जिन्हां खुदी मिटाई ए।
बलिहारी गुरसिखां तों जो तन मन अर्पण करदे ने।
बलिहारी गुरसिखां तों मैं जेहड़े भवजल तरदे ने।
गुरसिख रूप गुरु दा हुन्दे गुर तों सदके जांदे ने।
आप सिमरदे स्वास स्वास ते सभ नूं नाम जपांदे ने।
गुरसिखां दा रूप धार के सत्गुर परगट होंदा ए।
सत्गुर अपणा आप सदा गुरसिखां विच समोंदा ए।
धन गुरु ते धन गुरसिख ने जो इक मिक हो जांदे ने।
पांदे ने अवतार नाम जो अपणा आप गंवांदे ने।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि ऐसे गुरसिख जिन्होंने सत्गुरु–निरंकार के साथ अपनी प्रीत निभाई और जिन्होंने अपने आपको मिटाकर गुरसिखी मार्ग पर कदम बढ़ाया, उन पर मैं बलिहारी जाता हूँ। बलिहारी जाने का अर्थ है, न्यौछावर होना, कुरबान होना जो प्रेम निभाने के भाव को स्पष्ट करता है। गुरु और गुरसिख का परस्पर प्रेम उत्तम श्रेणी का प्रेम होता है। जो गुरसिख सत्गुरु की आज्ञा पर अपना तन, मन, धन तीनों अर्पण कर देते हैं, ऐसे समर्पित गुरसिख अपने आपको कुछ नहीं मानते बल्कि सत्गुरु को ही सब कुछ मानते हैं और उन्हें ही अपना सर्वस्व स्वीकार करते हैं। सत्गुरु की हाँ में हाँ और न में न करना उनकी सोच का आधार बन जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि ऐसी सोच अपनाने और अपनी खुदी मिटाने से जहाँ प्रीत निभती है, वहीं गुरु चरणों में समर्पित होने पर मुक्ति प्राप्त होती है। गुरसिख गुरु का ही रूप होता है। वह गुरु के प्रति हमेशा समर्पित रहता है। वह परमात्मा को जानकर, इसे अंग–संग देखते हुए इस प्रभु का सुमिरण करता है। स्वयं सुमिरण करता है और औरों को भी हर पल नाम सुमिरण करने की प्रेरणा देता है। हमें नामी को जानकर नाम सुमिरण करना है, बिना जाने सुमिरण का पूरा आनंद प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार नाम सुमिरण करना संसार के सभी दुखों का अन्त करने वाला है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि गुरसिखों का रूप धारण करके सत्गुरु संसार में प्रकट होता है। सत्गुरु अपने आपको गुरसिख के अन्दर समाहित कर देता है। धन्य है ऐसा गुरु और धन्य हैं ऐसे गुरसिख जो इकमिक हो जाते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि नामधन की प्राप्ति करके गुरसिख अपने अभिमान को मिटा देता है और सत्गुरु का ही रूप बन जाता है।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अन्न का आदर करें

– जैकी दुल्हानी

सम्राट विक्रमादित्य अपने लाव–लश्कर के साथ एक बार कहीं जा रहे थे। सवारी जब धान मण्डी से गुजर रही थी, तभी सम्राट ने देखा कि जमीन पर अनाज के दानें बिखरे पड़े हैं। देखकर वे हाथी से उतरे और खुश होकर बोले– वाह! जमीन पर इतने सारे हीरे बिखरे पड़े हुए हैं। यह कहकर वे अनाज के दानों को अपने हाथों से बिनने लगे। उन्हें ऐसा करते देखकर मंत्री और अन्य सभी लोग भी बिखरे हुए उस अनाज को बटोरने लगे। देखते ही देखते अनाज के उन दानों से सम्राट और अन्य की झोली भर गई। फिर सबको सम्बोधित करते हुए वे बोले– हमारे राज्य में अनाज की कमी का एक बड़ा कारण हमारा उसकी बर्बादी तथा अनादर है। कम से कम आठ–दस लोगों का पेट तो इससे भर ही जायेगा जबकि हम इसे अपने पैरों तले रौंद रहे थे।

कहते हैं सम्राट विक्रमादित्य के शासन काल में हमारे देश में अनाज की कमी नहीं रही।

आइए! प्रण करें कि हम किसी भी खाद्यान्न की बर्बादी और अपव्यय न करें ताकि हमारे भंडार भरे रहें और हम खुशहाल जिन्दगी जी सकें। ❖

रंग-बिरंगी धरती

– डॉ. परशुराम शुक्ल

रंग–बिरंगी धरती बच्चों,
रंग–बिरंगी धरती।

देखो बच्चों इस धरती पर,
वृक्ष हरे लहराते।
इस पर बैठे पक्षी
मीठे–मीठे राग सुनाते।
इनके नीचे रोज सवेरे,
छोटी हिरणी चरती।
रंग–बिरंगी धरती बच्चों,
रंग–बिरंगी धरती।

ऊँचे–ऊँचे पर्वत नदियां,
सबकी बात निराली।
इनकी शान बढ़ा देती है,
जंगल की हरियाली।

बूढ़ी नानी इस जंगल की,
हरदम रक्षा करती।

रंग–बिरंगी धरती बच्चों,
रंग–बिरंगी धरती।

जंगल का धरती से बच्चों,
बड़ा पुराना नाता।
बाघ, सिंह, गैंडे, हाथी को,
सारा जंगल भाता।
पानी और हवा जंगल की,
सबकी पीड़ा हरती।
रंग–बिरंगी धरती बच्चों,
रंग–बिरंगी धरती।

हरे–भरे लहराने वाले,
जंगल को मत काटो।
मार जंगली जीवों को तुम,
मौत न सबको बांटो।
जीव, जंगलों के मिटते ही,
सारी दुनिया मरती।
रंग–बिरंगी धरती बच्चों,
रंग–बिरंगी धरती।

मन्नू और मिट्ठू की मित्रता

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

'ठंडे–ठंडे पानी से नहाना चाहिए ...' गीत की पंक्तियां गुनगुनाता हुआ मन्नू लगभग आधे घंटे से बाथरूम में बैठा नहा रहा था। जब माँ के सब्र का बांध टूट गया तो उन्होंने मन्नू को आवाज लगाई, 'बाहर आओ बेटा! क्या सारा पानी खर्च करना है? शायद तुम्हें पानी की कीमत का अंदाजा नहीं है।'

माँ की आवाज मन्नू के कानों में पड़ी। 'मरता क्या न करता।' मन्नू झटपट बाथरूम से बाहर आया। कपड़े पहने और बाहर निकल पड़ा। तभी उसकी नजर घर की मुंडेर पर पड़ी। एक तोता टें–टें करता हुआ इधर से उधर घूम रहा था। मन्नू समझ गया कि वह शायद पानी की तलाश में है।

मन्नू को जाना तो कहीं और था किन्तु वह जा पहुँचा कुम्हार के पास। मिट्टी का बना एक बर्तन खरीदा तथा वापस अपने घर की ओर मुड़ गया। मन्नू ने मिट्टी के उस बर्तन को पानी से भरकर घर की मुंडेर पर रख दिया। तोता अब भी वहीं बैठा हुआ था। पानी को देखकर खुश हुआ। प्यास बुझाई और

उड़ गया। मन्नू टकटकी लगाए उसे उड़ता हुआ देख रहा था। तोता उड़कर घर के पास ही पीपल के पेड़ पर जा बैठा जहाँ उसका बसेरा था।

अगले दिन तोता फिर आया। पानी पिया और उड़ गया। मन्नू खड़ा हुआ उसे निहारता रहा। उड़ने से पहले उसने कुछ देर तक टें–टें की आवाज की जिसे मन्नू समझ नहीं सका था।

दो–तीन दिनों तक यही सिलसिला जारी रहा। आज ज्यों ही तोता पानी पीकर उड़ने को हुआ, मन्नू ने उसे पकड़ लिया। मन्नू के कोमल हाथों का स्पर्श पाकर तोते को अत्यंत प्रसन्नता हुई। आखिर वह भी मन्नू से मित्रता करना चाहता था, इसलिए। तोते ने अपनी चोंच मन्नू के हाथ में गड़ा दी। मन्नू तोते के मन के भाव पढ़ चुका था। उसे भूख सता रही थी।

फिर क्या था? मन्नू तोते को लेकर माँ के पास रसोईघर में आया। माँ ने तोते को खाने के लिए मटर के कुछ दाने दिए। उन्होंने प्यार से तोते का नाम 'मिट्ठू' रख दिया। माँ और मन्नू के मुख से 'मिट्ठू' शब्द सुनकर तोता फूला नहीं समाया।

शाम को मन्नू मिट्ठू के लिए बाजार से एक पिंजरा ले आया था। अब तोते का घर वह पिंजरा बन चुका था। मन्नू इसी पिंजरे में मिट्ठू को कभी बीज खाने को देता, कभी ताजी सब्जियां तो कभी गाजर, आम, केला या अंगूर जैसे फल। हाँ, कभी–कभी तो वह मिट्ठू को मिर्च भी खिलाया करता। ऐसा वह इसलिए करता था ताकि उसकी आवाज तेज बनी रहे। मन्नू एक कटोरे में पानी भरकर भी रख देता था पिंजरे के अन्दर।

मन्नू दोपहर के समय मिट्ठू को पिंजरे से बाहर निकालता। उसके साथ बातें करता और उसको गीत

गाना भी सिखाता। मिट्ठू ने मन्नू को अपना पक्का मित्र बना लिया था। वह उसके हर दिशा–निर्देश का पालन करने लगा था।

धीरे–धीरे करके मिट्ठू इन्सानों की तरह ही बोलने और गाने लगा था। यह देखकर मन्नू को अच्छा लगता था और माँ को भी। वह जब भी कहीं घर से बाहर निकलता, मिट्ठू उसके कंधे पर बैठ जाता। आते–जाते लोग मिट्ठू को इन्सानों की भाषा में बातें करते हुए देखते तो आश्चर्य से दाँतों तले उँगलियां दबाकर रह जाते। मिट्ठू लोगों का मनोरंजन करने में पारंगत हो चला था। मन्नू और मिट्ठू की मित्रता के चर्चे पूरे शहर में फैल चुके थे।

एक बार की बात है। मन्नू बाजार से कुछ आवश्यक सामान लेकर घर की ओर लौट रहा था। गली के नुक्कड़ पर सामने से आती तेज बाइक ने उसे टक्कर मार दी। मन्नू सड़क पर गिर पड़ा। शुक्र है कि मिट्ठू भी उस समय मन्नू के साथ था। मिट्ठू तेजी से उड़कर आया और माँ को बुला लाया। मन्नू को शीघ्र डॉक्टर के पास पहुँचाया गया। लगभग दो घंटे के उपरांत मन्नू को छुट्टी मिल गयी।

मन्नू के साथ–साथ माँ को भी मिट्ठू बहुत अधिक भाने लगा था। वह तो उनके हर सुख–दुख का साथी बना हुआ था। कभी–कभी मनुष्य भी ऐसी दोस्ती नहीं निभा पाते हैं। जैसे मूक प्राणी निभा देते हैं। ❖

सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

- हमें सेवा, सुमिरण, सत्संग करना है, हमने सबसे मीठा बोलना है, हमने दुनिया के लोगों के प्रति दयालुता वाला भाव रखना है।
- अंधविश्वास से ऊपर उठने का माध्यम ब्रह्मज्ञान है।
- गुरु की मति और सन्तों की शिक्षा हमेशा प्यार, सत्कार और करुणा बाँटना सिखाती है, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को उजागर करती है।
- भक्त के जीवन का उद्देश्य, हर आत्मा का कल्याण करना होता है।
- भक्त कभी भी और कहीं भी जन्में हों, उन्होंने परमात्मा को जानकर संसार को सार्थक भक्ति करने का ही संदेश दिया है।
- सबमें परमात्मा के दर्शन करते हुए प्रेम का व्यवहार करें।
- परमात्मा सर्वत्र है, यह समय के साथ बदलता नहीं। यह कायम–दायम है।
- दैनिक दिनचर्या के साथ–साथ, परमात्मा का अहसास भी होना जरूरी है।
- युगों–युगों से सन्तजन यही संदेश दे रहे हैं कि जीते–जी जाग जाओ और अपने जीवन में इस प्रभु को महसूस करो। इसे सबमें देखो, इसे हर समय देखो। ऐसा जीवन जीने के लिए जागना जरूरी है।
- जीवन में हर जगह, हर समय, हर परिस्थिति में जब इस एक परमात्मा का अहसास रहता है तो मन अपने–आप सुकून का अहसास करता है।
- किसी बात से कोई मनमुटाव अगर है भी तो उसको सन्त–मत अपनाकर दूर किया जा सकता है।
- कोई साधन, कोई सामान नया है तो वो भी पुराना हो जाएगा पर यह परमात्मा तो हर समय ही नया है। संसार में रहते हुए मन को इस परमात्मा पर ही आधारित रखना है, इस निराकार के आसरे ही हर पल जीना है।
- इस निराकार का आश्रय लेकर हम सेवा, सुमिरण, सत्संग से अपने जीवन को अच्छा बनाएं और संसार के लिए वरदान साबित हों।
- जब सांसारिक जीवन में भक्ति मार्ग पर चलकर अपने जीवन में निरंकार को प्राथमिकता देते हैं तब हमारे सारे कार्य बिना किसी बाधा के पूर्ण हो जाते हैं।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आध्यात्मिक शिक्षा भी आवश्यक है।
- अडिग विश्वास के साथ भक्ति पथ पर अग्रसर रहें।

सबका साथी सुलेख 'साथी'

हँसती दुनिया पंजाबी के सम्पादक श्री सुलेख साथी जी बहु–प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के स्वामी, लेखक, कवि, विचारक, पत्रकार, विश्लेषक एवं कुशल सम्पादक रहे हैं। आपने अनेकों पुस्तकों, चाहे वह हिन्दी की हों या पंजाबी की, का कुशल सम्पादन भी किया। आप हँसती दुनिया के साथ–साथ सन्त निरंकारी मिशन की पंजाबी पत्रिका 'सन्त निरंकारी' और 'एक नजर' पाक्षिक समाचार–पत्र के भी सम्पादक का कार्य करते रहे।

सुलेख साथी जी सन् 1977 से, जब हँसती दुनिया पंजाबी का आरम्भ हुआ, उसी समय से ही सम्पादक–मण्डल के साथ जुड़े रहे। लगभग 46 वर्षों की पत्रकारिता का अनुभव आपके पास था। उस अनुभव को आप बच्चों की भाषा में बच्चों को हँसती दुनिया में विशेष लेख 'सबसे पहले' के माध्यम से लगातार देते रहे। उसमें बच्चों को कैसे आदर्श अपनाने चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए और अन्ततः कैसे एक अच्छा इन्सान बनना चाहिए, यह प्रेरणा आप लगातार देते रहे। एक अच्छा इन्सान ही एक अच्छा नागरिक और अच्छा देशभक्त बन सकता है। इस प्रकार आपके लेख देश–भक्ति की प्रेरणा से परिपूर्ण भी होते थे।

आपने 'हँसती दुनिया', 'सन्त निरंकारी' और 'एक नज़र' (पंजाबी) एवं पंजाबी पुस्तकों के सम्पादन का सम्पूर्ण कार्य कुशलतापूर्वक निभाया। इन अनेकों जिम्मेदारियों के साथ–साथ कई शैक्षिक संस्थानों में प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी भी रहे। आप प्रचारक एवं कवि के साथ–साथ परिवार की भूमिका में भी प्रखर रहे। आप सभी के मित्र थे। बच्चों के भी एवं बड़ों के भी। जब भी कभी कहीं भी होते, तो बात जो भी हो, अपनी बेबाक राय बिना किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात के अर्थात् पूर्णतया निष्पक्ष रूप से रखते थे। आपके साथ आना–जाना लगा ही रहता ही था। एक बार मैंने आपसे चलते–चलते कह दिया, 'साथी हाथ बढ़ाना, एक अकेला थक जाएगा मिलकर... अभी मैं और कुछ बोल पाता वह मुझे कहने लगे कि यह भी है, 'साथी रे तेरे बिना भी क्या जीना' इस तरह की अभिव्यक्ति केवल सच्चा साथी ही कर सकता है। आपने अन्त समय (8 जुलाई, 2023) तक परमपिता–परमात्मा से जुड़कर जीवन जिया और इस जीवनलीला को जीकर सभी को कर्म भाव से जीने का सन्देश भी दिया। आप प्रभु रज़ा में जीवन को महत्ता देते थे और आपने लिखा भी था–

जीवन क्या है, प्रभु दया है,
मरण क्या है, बस प्रभु रज़ा है।

आपका अनुभव, आपकी शिक्षा हमेशा हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी। समस्त हँसती दुनिया परिवार आपको नतमस्तक है और अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करता है।

– विमलेश आहूजा

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालरा

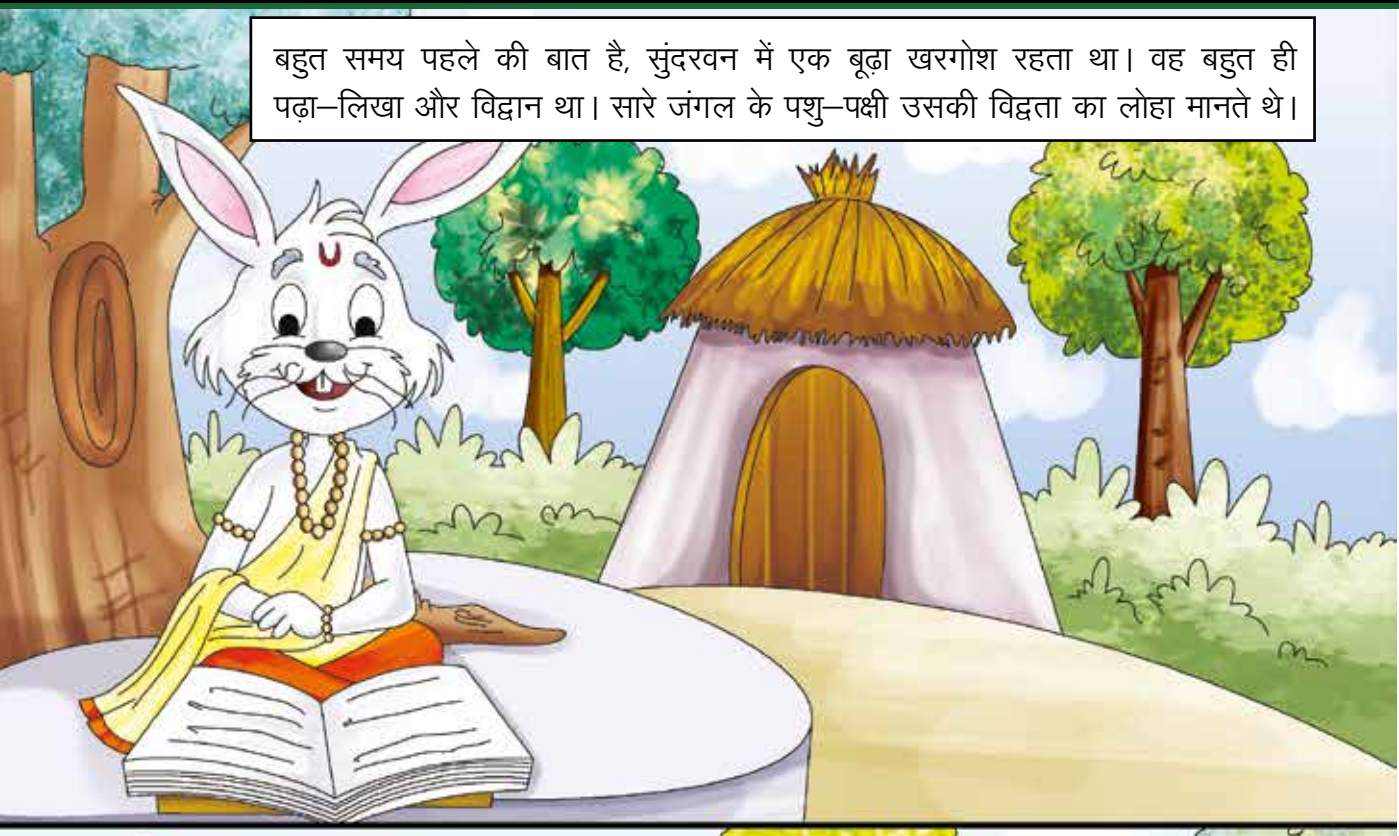

एक बार वह कहीं जा रहा था तो उसने देखा कि जामुनों के पेड़ काले–काले जामुनों से भरे हुए थे। जिसे देखकर खरगोश के मुँह में पानी भर आया था।
एक बड़े से जामुन के पेड़ पर उसे तोतों का एक झुंड जामुन खाता दिखाई दिया।
प्यारे नातियों मेरे लिए भी थोड़े से जामुन गिरा दो।
उन तोतों में मिट्ठू नाम का एक तोता बड़ा शरारती और चंचल था।
दादाजी, यह तो बताइए कि आप गर्म जामुन खायेंगे या ठंडे?

बूढ़ा खरगोश हैरान होकर बोला, "भला जामुन भी कहीं गर्म होते हैं? चलो मुझसे मज़ाक न करो। मुझे थोड़े से जामुन तोड़ दो।"

अरे दादाजी, "आप ठहरे इतने बड़े विद्वान। यह भी नहीं जानते कि जामुन गर्म भी होते हैं और ठंडे भी। पहले आप बताइए कि आपको कैसे जामुन चाहिए? भला ये जाने बिना हम आपको जामुन कैसे देंगे?

बूढ़े और विद्वान खरगोश की समझ में बिल्कुल भी न आया कि भला जामुन गर्म कैसे होंगे? फिर भी वह उस रहस्य को जानना चाहता था।
"बेटा, तुम मुझे गर्म जामुन ही खिलाओ ठंडे तो मैंने बहुत खाएं हैं।"

नन्हें मिट्ठू ने बूढ़े खरगोश की यह बात सुनकर जामुन की एक डाली को जोर से हिलाया। पके–पके ढेर से जामुन नीचे धूल में बिछ गए। बूढ़ा खरगोश उन्हें उठाकर फूंक मारकर खाने लगा।

बेटा? "ये तो साधारण ठंडे जामुन ही हैं।'

"क्या कहा ठंडे हैं? तो फिर आप इन्हें फूंक–फूंककर क्यों खा रहे हैं? इस तरह तो सिर्फ गर्म चीजें ही खाई जाती हैं।"

मिट्ठू तोते की बात का रहस्य बूढ़े खरगोश की समझ में आ गया और वह बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसका घमंड दूर हो गया।

बन्धन कच्चे धागे का

– प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

रक्षाबन्धन का त्योहार प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। जुलाई या अगस्त के महीने में पड़ने वाले इस पावन त्योहार को भाई–बहन के प्यार के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। रक्षाबन्धन में जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि धागे का बहुत महत्व है। राखी में कच्चे सूत से लेकर, कलावा (मोली), रेशमी धागे या सोने–चांदी जैसी कीमती धातुओं का भी प्रयोग किया जाता है।

प्रातः स्नान आदि के बाद बहनें पूजा की थाली सजाती हैं। जिसमें राखी के अलावा हल्दी, चावल, रोली, मिठाई, फल आदि सजाकर भाई को टीका लगाती हैं और राखी बांधकर मिठाई खिलाती हैं। भाई उपहार स्वरूप कुछ वस्तुएं, पैसे आदि बहनों को भेंट करते हैं। बहनें भाई की दीर्घ आयु की कामना करती हैं। भाई सुख–दुःख में साथ निभाने का विश्वास दिलाते हैं। रक्षाबन्धन का त्योहार भाई–बहन के पवित्र रिश्ते को पूरा आदर व सम्मान देता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध चल रहा था। देवताओं की स्थिति कमजोर होती चली जा रही थी। पराजय के लक्षण स्पष्ट थे। उन्होंने अपने गुरु बृहस्पति से इस सम्बन्ध में विचार–विमर्श किया। गुरु बृहस्पति ने कहा कि अगले दिन इन्द्र, युद्ध भूमि में जाने से पूर्व, अपनी पत्नी इन्द्राणी से रक्षा–सूत्र बंधवाकर जाएं। इन्द्र ने ऐसा ही किया। इन्द्राणी ने पूर्ण निष्ठा और विश्वास के साथ कच्चे धागे से बना रक्षा–सूत्र इन्द्र की कलाई में बाँध दिया। इन्द्र युद्ध भूमि की तरफ चल दिए। परिणाम आश्चर्यजनक रहा। युद्ध का पासा पलट गया और देवता विजयी हुए। आत्मरक्षा, दृढ़ता और विजय प्राप्ति के लिए किसी उपयुक्त पात्र से रक्षा–सूत्र बंधवाने की परम्परा इस घटना से पहले भी थी किन्तु अब यह और भी अधिक दृढ़ हो गई।

मध्यकाल तक आते–आते रक्षा–सूत्र का कच्चा धागा, रक्षाबन्धन कहलाने लगा और इसका दायरा सिमटकर भाई–बहन तक सीमित रह गया। मूल भावना अब भी रक्षा की ही रही और उसका दृष्टिकोण यह रहा कि जब भी कोई महिला किसी पुरुष को रक्षाबन्धन भेजे तो वह पुरुष उस महिला को अपनी बहन के रूप में स्वीकार करके, उसकी रक्षा के लिए हर सम्भव प्रयत्न करे।

चित्तौड़ की महारानी थी कर्णावती। उन पर आक्रमण कर दिया गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने। महारानी ने किले के दरवाजे बन्द करवा दिये। किला मजबूत था इसलिए बहादुरशाह के लिए उसे फतह करना सरल नहीं था। मगर चित्तौड़ की सेना कब तक किले के अन्दर रह सकती थी। गुजरात की सेना काफी बड़ी थी, उसकी तुलना में चित्तौड़ की सेना बहुत कम थी। बहादुरशाह अपनी सेना के साथ किले का घेरा डाले हुए था और नित्य किले में प्रवेश करने के लिए नये–नये प्रयत्न कर रहा था। ऐसी विषम स्थिति में महारानी कर्णावती ने विचार किया। क्यों न बादशाह हुमांयू को रक्षाबन्धन भेजकर

उनसे सहायता ली जाए परन्तु एक आशंका थी। क्या परदेशी और दूसरे धर्म को मानने वाला व्यक्ति रक्षाबन्धन को महत्व देकर उन्हें बहन के रूप में स्वीकार करेगा? मदद की अधिक उम्मीद नहीं थी। फिर भी महारानी ने कच्चे धागे की शक्ति को कसौटी पर कसना उचित समझा। उन्होंने अपने एक विश्वस्त अनुचर द्वारा रक्षाबन्धन, बादशाह हुमायूं के पास भेज दिया। बादशाह उस कच्चे धागे से अप्रभावित नहीं रह सका। भारतीय संस्कृति में रक्षाबन्धन के महत्व के बारे में वह काफी सुन चुका था। उसने तत्काल महारानी कर्णावती को बहन के रूप में स्वीकार किया और अपनी सेना को चित्तौड़गढ़ की रक्षा के लिए भेजा।

हुमायूं और कर्णावती की उपरोक्त घटना से भी पहले की एक और घटना है जिसमें एक विदेशी महिला ने रक्षाबन्धन का सहारा लिया और इन कच्चे धागों ने उसे निराश नहीं किया। वह महिला थी यूनान की एक युवती– रेक्सोना। सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया तो रेक्सोना उसके साथ ही यहाँ आयी थी। सिकन्दर के विश्वविजय करने के विचारों से वह सहमत नहीं थी। किन्तु जब सिकन्दर नहीं माना तो उसकी सुरक्षा की चिन्ता से ग्रस्त होकर वह भी उसके साथ ही चली आई। भारत में सम्राट पुरु का शौर्य सुविख्यात था। सिकन्दर की सेना भी उनसे आतंकित थी। इसलिए उसकी सेना भारत में आगे बढ़ना नहीं चाहती थी किन्तु सिकन्दर की जिद के आगे वह विवश थी। इस युद्ध में सिकन्दर की पराजय की स्पष्ट आशंका थी। इन परिस्थितियों में रेक्सोना को सिकन्दर के प्राणों की रक्षा की बहुत चिन्ता थी। जिस दिन सिकन्दर की सेना ने झेलम नदी पार करके अपना पड़ाव डाला, संयोगवश उस दिन रक्षाबन्धन का त्योहार था। रोक्साना ने अपने

अनुचरों से इस त्योहार के बारे में जानकारी प्राप्त की तो उसने मन ही मन एक योजना बनाई और उस योजना के अनुसार उसने गुप्त रूप से सम्राट पुरु के पास रक्षाबन्धन भेज दिया। रक्षाबन्धन के साथ उसने बहन के रूप में पुरु से यह मांग भी की कि वे सिकन्दर के प्राणों की रक्षा करें। सम्राट पुरु धर्मसंकट में पड़ गये। किन्तु कच्चे धागे का सम्मान उन्होंने बनाये रखा। युद्ध हुआ और उसमें ऐसे अवसर आए जब सम्राट पुरु यदि चाहते तो आसानी से सिकन्दर का वध कर सकते थे। किन्तु उन्होंने अपनी बहन की बात रखने के लिए सिकन्दर के प्राण नहीं लिए और उसके बदले में पराजय स्वीकार कर ली।

मुगल शासन के उत्तरार्द्ध में एक बादशाह थे– शाह आलम सानी। उन्होंने इतिहास में तो विशेष प्रसिद्धि प्राप्त नहीं की किन्तु रक्षाबन्धन की प्रतिष्ठा उन्होंने भी बनाए रखी। एक ब्राह्मण महिला रामकौर को कच्चे धागे के बदले में उन्होंने अपनी बहन के रूप में स्वीकारा और अन्त तक उसे उसी रूप में सम्मान प्रदान किया। रक्षाबन्धन के दिन रामकौर राज्यमहल में आती और बादशाह को राखी बांधती; बदले में बादशाह उसे काफी धन–दौलत देकर विदा करते।

अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर तो बड़ी शान–ओ–शौकत के साथ रक्षाबन्धन का उत्सव मनाते थे। शाह आलम सानी को राखी बांधने वाली एक ही हिन्दू महिला थी जबकि जफर को राखी बांधने वाली हिन्दू महिलाओं की संख्या काफी अधिक थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय जनजागरण के लिए गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंग–भंग का विरोध करते हुए रक्षाबन्धन त्योहार को बंगाल निवासियों के पारस्परिक भाईचारे तथा एकता का प्रतीक बनाकर इस त्योहार का उपयोग किया था।

भारत के इस सुन्दर त्योहार का मूल भाव प्यार और अपनत्व को बढ़ावा देना है। राखी के त्योहार को हिन्दी फिल्मों में बहुत अच्छे गीतों द्वारा भी महत्व प्रदान किया गया है। राखी प्यार भरा सुन्दर त्योहार है। ❖

चिड़िया

– मीनू सिंह

एक थी चिड़िया मोटी–ताजी,
उड़ने से लाचार थी।
ऊपर से तो स्वस्थ दिख रही,
अन्दर से बीमार थी।

चलते फिरते दाना खाती,
पानी पीती गटर–गटर।
फूल की सेज पर बैठी–बैठी,
सोती रहती थी दिनभर।

बंदर भालू उसे समझाते,
किया करो तुम भी कुछ काम।
काम करोगी स्वस्थ रहोगी,
सुस्ती छोड़ो त्यागो आराम।

धीरे–धीरे बात पते की,
समझ गई चिड़िया रानी।
अपने काम स्वयं अब करती,
दूर हुई सब परेशानी।

मोर

– रामअवध राम

प्रकृति ने धरती पर,
जितने जीवों की रचना की है।
उनमें मोर सर्वाधिक,
सौन्दर्यवान पक्षी है।।

नीली चमकीली पर इसकी,
मखमली नीली गर्दन।
सिर कलगी कजरारी आँखें,
आकर्षित करती मन।।

वर्षा के मौसम में छाये,
देख गगन में घन।
थिरक–थिरककर नाचे,
होकर मस्त मगन।।

सौन्दर्य का धनी मोर,
पक्षियों में न्यारा।
जहाँ–जहाँ भी जाये,
मनोरंजन करे हमारा।।

वन, बाग–बगीचों में,
करता है बसेरा।
केहाँ केहाँ की बोली बोले,
होते ही सवेरा।।

ज्वार बाजरा चना मक्का,
बड़े चाव से खाता है।
चूहे छिपकली साँप,
को भी निगल जाता है।।

सन् उन्नीस सौ तिहत्तर,
भारत सरकार ने मान।
मोर को राष्ट्रीय पक्षी,
का दिया सम्मान।।

वन्य जीव संरक्षण अधिनियम,
के तहत सनरक्षित।
मोर का शिकार करना,
किया गया प्रतिबंधित।।

सबसे जहरीला कौन?

– रेनू सैनी

वीरनगर में वीरसिंह नामक राजा राज्य करते थे। वे बहुत ही दयालु और न्यायप्रिय थे। उनके राज्य में प्रजा को किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं थी। उनका मुख्य सलाहकार संपतसिंह वृद्ध हो गया था इसलिए अब वह पहले जैसी चुस्ती–फुर्ती से काम नहीं कर पाता था। एक दिन संपतसिंह बोला, ''महाराज, मैं वृद्ध हो गया हूँ। अब मुझसे पहले की तरह काम नहीं होता। कृपया आप अपने लिए किसी युवा और योग्य सलाहकार को चुन लीजिए।''

संपतसिंह की बात पर वीरसिंह बोले, ''नहीं–नहीं, हम तुम्हारे रहते दूसरा सलाहकार रखने की सोच भी नहीं सकते।''

इस पर संपतसिंह बोला, ''महाराज, 'कुछ समय तक नया सलाहकार मेरे साथ रहेगा तो मैं अपने अनुभव से उसे बहुत कुछ सिखा दूंगा।'' संपतसिंह का सुझाव वीरसिंह को पसंद आया। उन्होंने अपना सलाकार चुनने के लिए घोषणा करवा दी।

दूर–दूर से आए अनेक नवयुवक राजमहल में एकत्रित हो गये। वीरसिंह बोले, ''तुम उनकी परीक्षा कैसे लोगे?''

संपतसिंह बोले, ''महाराज, मैं एक ऐसा प्रश्न पूछूंगा जिसका जवाब वही व्यक्ति दे पाएगा जो समझदार, ईमानदार और विद्वान होगा।

निर्धारित दिन सभी नवयुवक राजदरबार में उपस्थित हो गये। संपतसिंह ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया और बोले, ''मैं आप सभी से केवल एक प्रश्न पूछूंगा और जो उसका सही जवाब देगा, उसे ही राजा का सलाहकार चुन लिया जाएगा।'' केवल एक ही प्रश्न सुनकर सभी नवयुवक खुशी से चहक उठे। सबको लगा केवल एक सवाल का जवाब देना तो बहुत सरल है।

संपतसिंह बोले, ''विद्वजनों, कृपया यह बताएं कि सबसे तेज काटने वाला और जहरीला कौन होता है?'' संपतसिंह के प्रश्न पर सभी नवयुवक इसका जवाब सोचने लगे। एक नवयुवक राजा से बोला, ''महाराज, सबसे तेज काटने वाला ततैया होता है। उसके काटने पर इंसान की चीख निकल जाती है।'' उसका जवाब सुनकर संपतसिंह चुप हो गए।

दूसरा नवयुवक बोला, ''महाराज, मेरी नजर में तो सबसे तेज काटने वाली मधुमक्खी है।''

तीसरे ने कहा, ''मेरे नजरिए से तो बिच्छू सबसे तेज काटता है।''

चौथा नवयुवक बोला, ''महाराज, साँप का काटा तो पानी भी नहीं माँगता। इसलिए वही सबसे तेज काटने वाला वही हुआ।'' इस प्रकार सभी नवयुवक अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार जवाब देते रहे लेकिन संपतसिंह को किसी का भी जवाब संतोषजनक नहीं लगा।

अब केवल एक नवयुवक ही जवाब देने से बचा हुआ था। वह नवयुवक पहरावे से साधारण लग रहा था। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था। संपतसिंह उस नवयुवक की ओर देखकर बोले, ''अभी तुमने जवाब नहीं दिया। तुम इस बारे में क्या कहना चाहते हो?''

संपतसिंह की बात सुनकर वह बोला, ''मेरी दृष्टि में तो सबसे ज्यादा ज़हरीले एक नहीं बल्कि दो होते हैं।'' वह युवक बोला, ''एक निंदक और दूसरा चाटुकार।''

यह जवाब सुनकर राजा प्रश्नवाचक मुद्रा में युवक को देखने लगा। अन्य लोग भी युवक की ओर देखते हुए बोले, ''भला ये दोनों जहरीले कैसे हुए? कृपया विस्तार से बताएं।''

इस पर युवक बोला, ''राजन् निंदक के हृदय में निंदा द्वेष रूपी जहर भरा रहता है। वह निंदा करके पीछे से ऐसे काटता है कि मनुष्य तिलमिला उठता है।'' उसके इस जवाब पर संपतसिंह बोले, ''बिल्कुल सही।''

अब युवक दोबारा बोला, ''दूसरा जहरीला होता है चाटुकार जो अपनी वाणी में मीठा विष भरकर ऐसी चापलूसी करता है कि मनुष्य अपने दुर्गुणों को गुण समझकर अहंकार के नशे में चूर हो जाता है। चापलूस की वाणी चापलूस पसंद व्यक्ति के विवेक को काटकर जड़मूल से नष्ट कर देती है। अनेक ऐसे उदाहरण सामने हैं जिनमें निंदक व चापलूस ने मनुष्य को इस प्रकार काटा कि वे जड़ से समूल नष्ट हो गए।'' युवक का जवाब सुनकर राजा समेत सभी दरबारी उनसे पूरी तरह सहमत हो गए।

युवक की बात सुनकर संपतसिंह राजा से बोले, ''महाराज, लीजिए आज से आपको एक नया और समझदार सलाहकार मिल गया है।'' ❖

क्या होती है विश्व धरोहर

—विद्या प्रकाश

विश्व धरोहर किसी देश की संस्कृति तथा इतिहास से जुड़े स्थल होते हैं। इनमें वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक तथा भवन सम्मिलित होते हैं। विश्व विरासत स्थल समिति द्व ारा इन स्थलों का चयन किया जाता है। यह समिति यूनेस्को के तत्वावधान में हमारी प्राचीन विरासतों तथा ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण करती है।

किसी स्थल को विश्व धरोहर के रूप में चयनित करने के लिए निश्चित चयन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। किसी देश को सर्वप्रथम सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक हिसाब से उन स्थलों की सूची बनानी होती है जिनका नाम वह विश्व विरासत में दर्ज कराना चाहता है। इसे परीक्षण–सूची कहा जाता है। तत्पश्चात् इस सूची का मूल्यांकन अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद् तथा विश्व संरक्षण द्वारा किया जाता है। ये संस्थायें विश्व विरासत समिति को अपनी सिफारिश प्रेषित करती हैं। इस समिति की सालभर में एक बार बैठक होती है जिसमें निर्धारित मापदण्डों के अनुसार विश्व धरोहर के रूप में किसी स्थान या स्मारक का चयन किया जाता है।

समिति का किसी स्मारक या स्थान को विश्व धरोहर के रूप में चुनने के लिए अपना मापदण्ड होता है। रचना ऐसी हो जो मानवनिर्मित हो तथा उत्कृष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करे। रचना मानवीय मूल्यों को

दर्शाने वाली हो। ऐसी कृति हो जो मानव की किसी ऐसी संस्कृति तथा सभ्यता की परिचायिका हो जो वर्तमान में नहीं है। कोई ऐतिहासिक इमारत हो जो वास्तुशास्त्र तथा तकनीक की मिसाल हो। ऐसा कोई बेहतरीन नमूना हो जिसका मानव की ऐतिहासिक परम्परा के साथ पर्यावरण से सम्बन्ध हो तथा जो कला और साहित्य का परिचायक हो।

इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चर हेरिटेज (इनटेक) भारतीय धरोहरों को सुरक्षित रखने वाली गैर सरकारी संस्था है। सन् 1984 में स्थापित इस संस्था का कार्यालय दिल्ली में है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन धरोहरों के प्रति लोगों में जागरुकता लाना तथा उनका संरक्षण करना है। यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एण्ड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) की स्थापना सन् 1945 में हुई थी। जिसका मुख्य कार्यालय फ्रांस की राजधानी पेरिस में है। इसका मुख्य उद्देश्य मानवाधिकारों तथा संस्कृति की रक्षा करना है। ❖

क्या आप जानते हैं?

संकलन : रामअवध राम

- कॉस्टिक सोडा का कैमिकल नाम सोडियम हाइड्राक्साइड है।
- मानव शरीर में ओलेक्रैनन कोहनी के पीछे स्थित है।
- दिल्ली स्थित जन्तर–मन्तर का निर्माण जयपुर के महाराजा जयसिंह द्वितीय ने करवाया था।
- सबसे बड़ी नहर स्वेज नहर मिस्र में है।
- विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान सहारा रेगिस्तान (अफ्रीका) में है।
- सबसे अधिक ऊँचाई पर उड़ने वाला पक्षी गिद्ध है।
- संसार में सभी जीव सूर्य की ओर देख सकते हैं, सिवाय चील के। चील सूर्य की ओर नहीं देख सकती।
- चमगादड़ चल नहीं सकते। दरअसल इनके पैरों की हड्डियां इतनी पतली होती हैं कि उन्हें चलने में असुविधा होती है।
- पांडा भालू के आहार में 99 प्रतिशत हिस्सा बांस का ही होता हैं
- एक मधुमक्खी चार हजार फूलों से रस लेती है तब जाकर वह एक बड़ा चम्मच शहद तैयार कर पाती है।
- मधुमक्खी की आँखों में बाल होते हैं।
- ऑस्ट्रिया की मुद्रा यूरो है।
- लखनऊ शहर गोमती नदी के किनारे स्थित है।
- ब्राजील की राजकीय भाषा पुर्तगीज है।
- हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक नमक की एकमात्र खान मंडी जिला के गुम्मा व द्रंग में है।
- लोकसभा तथा राज्यसभा की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करता है।
- अफ्रीका महाद्वीप में सबसे अधिक देश हैं।
- गाँधी सागर बाँध चम्बल नदी पर बना है।
- अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यात्री डकार नहीं ले सकते।
- दरियाई घोड़े का पसीना गुलाबी रंग का होता है।
- बिल्लियां अल्ट्रासाउंड सुन सकती हैं।
- शहद कभी न खराब होने वाला भोज्य पदार्थ है।
- कंगारू का नवजात शिशु 2.5 सेंटीमीटर लम्बा होता है।
- घोंघा ब्लेड की धार पर बिना घायल हुए चल सकता है।
- मगरमच्छ अपने दाँतों में फंसे मांस को निकालने के लिए चिड़ियों की मदद लेता है और उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता।
- तानसेन के गुरु हरिदास थे।

पेड़ लगाओ

डॉ. रामनिवास 'मानव'

पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ।
जीवन को खुशहाल बनाओ।

पेड़ बड़े हैं औघड़ दानी।
देते जग को जीवन पानी।

पेड़ जगत का ताप मिटाते।
तन–मन का सन्ताप मिटाते।

फल देकर भी पत्थर खाते।
पाठ विनय का हमें पढ़ाते।

इनसे शुद्ध वायु मिलती है।
वायु से ही आयु बढ़ती है।

पक्षी, गिरगिट या बन्दर हैं।
पेड़ों पर ही उनके घर हैं।

सारे महफिल वहीं सजाते।
सुबह–शाम गाते–बतियाते।

पेड़ लगाओ, उन्हें बचाओ।
जग को जीने योग्य बनाओ।

मेरी बगिया में

श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

शाम, सवेरे कोयल गाती मेरी बगिया में,
मीठे–मीठे गीत सुनाती मेरी बगिया में।

भौरें गुन–गुन राग छेड़ते, फूलों पर मंडराते,
तितली कोमल पंख हिलाती मेरी बगिया में।

फूल डोलते पंख खोलते महक–महक इतराते,
कलियां भी है गंध लुटातीं मेरी बगिया में।

गेंदा और गुलाब महकते टेसू रंग दिखाते,
चम्पा, जूही और चमेली मेरी बगिया में।

रोज चहकते पंछी प्यारे चिंहुक–चिंहुक कुछ कहते,
फुदक–फुदक चिड़िया इठलाती मेरी बगिया में।

नीबू, जामुन, आम, संतरा, पके हुए अमरुद,
कुतर–कुतर मैना है खाती मेरी बगिया में।

ठगी महंगी पड़ी

–दीपांशु जैन

राजस्थान के किसी गाँव में रामधन नामक किसान रहता था। सीधा–सादा आदमी था, मगर था बड़ा चतुर। क्या मजाल कि कोई उसे धोखा दे जाए। उसके गाँव में हमेशा पानी की कमी रहती थी। कुआं भी नहीं था। दूर से पानी लाना पड़ता था।

रामधन के पिता हर किसी की बात पर भरोसा कर लेते थे। दूसरों की बात मानकर बेटे से लड़–झगड़ भी पड़ते थे। एक बार रामधन के पिता लड़–झगड़कर कहीं चले गये। हफ्तों तक गाँव वापस नहीं आए। रामधन को चिन्ता हुई। उसने उन्हें ढूंढ लाने का निश्चय किया। सर्दी का मौसम था। उसने चार कम्बल अपने साथ लिए और पिता को ढूंढने निकला। ढूंढते–ढूंढते वह दूर निकल गया। एक हरा–भरा गाँव था। वह गाँव बारहमासी नदी के किनारे बसा होने के कारण उस गाँव में जल से भरा हुआ एक कुआं था। एक किसान बैलों की सहायता से रहट चला रहा था। रहट के पास ही किसान के तीन साथी बैठे गपशप कर रहे थे। रहट की बाल्टियों (डोलियां) से पानी की धार बहती हुई खेत सींच रही थी।

रामधन ने यह देखा तो आश्चर्य में पड़ गया। इससे पहले उसने रहट नहीं देखा था। उसने पहले तो पानी को छूकर देखा। फिर हाथ धोकर पानी पिया। उसकी थकान दूर हो गई।

रामधन ने किसान से पूछा– भैया, तुम्हारा कुआं बहुत बढ़िया है। परन्तु एक बात समझ में नहीं आई। कौन इस कुएं के अन्दर बैठा इतनी सारी बाल्टियों को भर रहा है? क्या वह थकता नहीं?

रामधन की बात सुनकर किसान हँसकर बोला– बाल्टियों को तेरा बाप भर रहा है। उनके पानी से खेती की सिंचाई हो रही है।

रामधन ने कहा– अच्छा, मेरा बाप यहाँ आ गया। मगर भैया, इस कड़ाके की सर्दी में भी वह कुएं में बैठा बाल्टियों को भर रहा है। क्या उसे ठण्ड नहीं लगती?

रामधन की बात सुनकर इस बार किसान को हँसी आ गई। साथ में बैठे दूसरे लोग भी हँसने लगे। किसान ने रामधन से कहा– हाँ, सर्दी तो जरूर लग रही होगी। अगर तुम्हें अपने पिता की इतनी चिन्ता है तो ये चारों कम्बल मुझे दे दो। मैं उनके पास पहुँचा दूंगा।

पास बैठे साथियों ने भी कहा– हाँ भैया, किसान ठीक ही तो कह रहा है। कम्बल दे दो।

रामधन कुछ सोचने लगा। फिर बोला– तुम ठीक ही कहते हो। लो, कम्बल उन्हें दे देना। मेरी राम–राम कह देना। मैं फिर आकर मिल लूंगा।– कहते हुए उसने कम्बल दे दिये।

रामधन आगे बढ़ गया। उसके जाने के बाद किसान और उसके साथी उसकी बेवकूफी पर बड़ी देर तक हँसते रहे।

किसान के तीनों साथियों ने कहा– अब हमें चारों कम्बल आपस में बांट लेने चाहिए।

किसान लालची था। बोला– कम्बल तो मैं ही रखूंगा। मैंने ही अपनी होशियारी से उसे बुद्धू बनाया है।

किसान के साथी बहुत बिगड़े। उन्होंने गाँव में सभी को सारी बातें बता दीं।

महीनों बीत गये। खेत में गेहूँ की फसल पककर लहलहाने लगी। किसान का परिवार फसल काटने में जुटा हुआ था। एक दिन अचानक रामधन आ धमका।

किसान ने उसे पहचान लिया। हँसते हुए पूछा– कहो भैया, कैसे आना हुआ? तुम्हारे पिता खूब मजे में हैं। कम्बल ओढ़कर वह कुएं में आराम से सो रहे हैं। इस बार उन्हें क्या देने आए हो?

रामधन ने भोलेपन से उत्तर दिया– भैया, इस बार मैं कुछ देने नहीं, गेहूँ की आधी फसल और अपने पिता को वापस लेने आया हूँ।

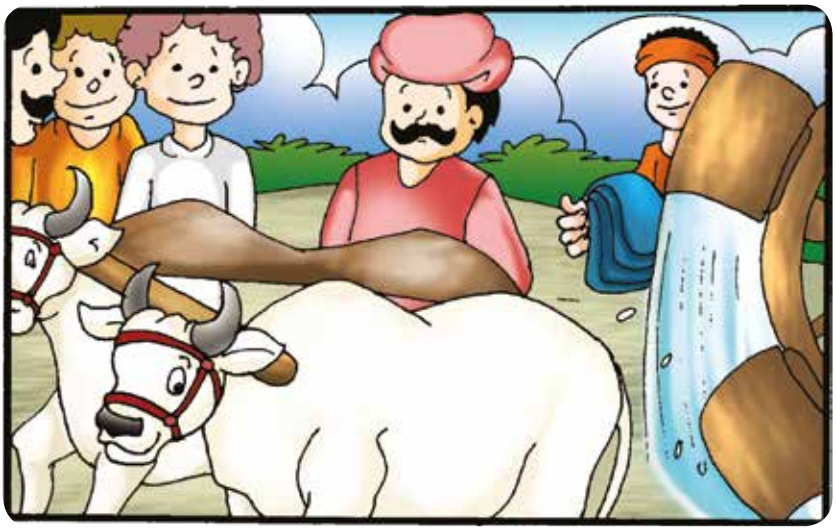

किसान उसे देखता रह गया और बोला– आधी फसल! वह कैसे?

रामधन ने भोलेपन से कहा– भैया, मेरे पिता ने कड़ाके की सर्दी में ठिठुरते हुए बाल्टियों में पानी भरा था। उसी से फसल की सिंचाई हुई है। तुमने स्वयं यह बात कही थी। अब बताओ, मैं आधी फसल का हकदार हूँ न?

किसान यूं कहाँ मानने वाला था। वह रामधन को बुरा–भला कहने लगा। रामधन ने गाँव की पंचायत में शिकायत की।

किसान के तीनों साथियों ने सोचा– किसान को उसकी कुटिलता का पूरा मजा चखाना चाहिए। चारों कम्बल हथियाकर वह बड़ा होशियार बनता था।

पंचों ने पूरी बात सुनी। फिर रामधन से कहा– किसान ने तुमसे मजाक किया था। भला, कोई आदमी यह काम कर सकता है?

रामधन ने सहजता से उत्तर दिया।– मैं क्या जानूं? मैं ठहरा भोला–भाला। मेरे गाँव में ऐसे बढ़िया कुएं भी नहीं हैं। न ही मैंने कभी रहट चलता देखा। रही बात मजाक की। यह तो किसान को कम्बल हड़पते समय सोचना चाहिए था। मैंने तो इसकी बात सच्ची समझी, कम्बल दे दिये। अब मुझे न्याय मिलना चाहिए।

पंचों ने गवाही के लिए किसान के साथियों को बुलवाया। वे किसान से कुढ़ तो रहे ही थे। उन्होंने तुरन्त कहा– रामधन ठीक कहता है। किसान ने झूठ बोलकर इससे चार कम्बल लिये थे।

पंचों ने फैसला दिया।– रामधन को किसान ने झूठ बोलकर ठगा। अब उसे अपनी आधी फसल हरजाने में देनी पड़ेगी। साथ ही रामधन के पिता को भी ढूंढकर लाना पड़ेगा।

बेचारा किसान बगलें झांकने लगा। गाँव वालों के आगे उसकी एक न चल सकी। उसे आधी फसल रामधन को देनी पड़ी। मगर उसके पिता को वह कहाँ से ढूंढकर लाता। वह रामधन से बोला– भैया, आधी फसल ले चुके हो। अब तो माफ कर दो। बताओ, मैं तुम्हारे पिता को कहाँ से ढूंढकर लाऊँ? मैं तो उन्हें जानता भी नहीं। चाहो तो कुछ और जुर्माना ले लो।

यह सुनकर रामधन को हँसी आ गई। बोला– बस, हार गये। बड़े होशियार बनते थे। जाओ, माफ किया। मेरे पिता घर लौट आए हैं। याद रखो, फिर किसी को धोखा मत देना, वरना सारी फसल खो बैठोगे। जुर्माना अलग भरोगे।– कहता हुआ वह घर लौट आया। ❖

एक अद्भुतजीव – बीवर

– अंकुश जैन

जन्तुओं की दुनिया में बीवर जैसा कार्य–कुशल और सूझबूझ रखने वाला प्राणी शायद ही कोई हो। उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के ठंडे क्षेत्रों में पाया जाने वाला बीवर, जन्तु–जगत का 'इंजीनियर' कहा जा सकता है।

जलस्थली प्राणी है 'बीवर'। यह रोडेंशिया श्रेणी के अंतर्गत आता है। यह अधिकतर तो जल में रहता है, लेकिन भूमि पर भी अपना कार्य करता है तथा भोजन करता है। इसके कृंतक दंत रूखानी

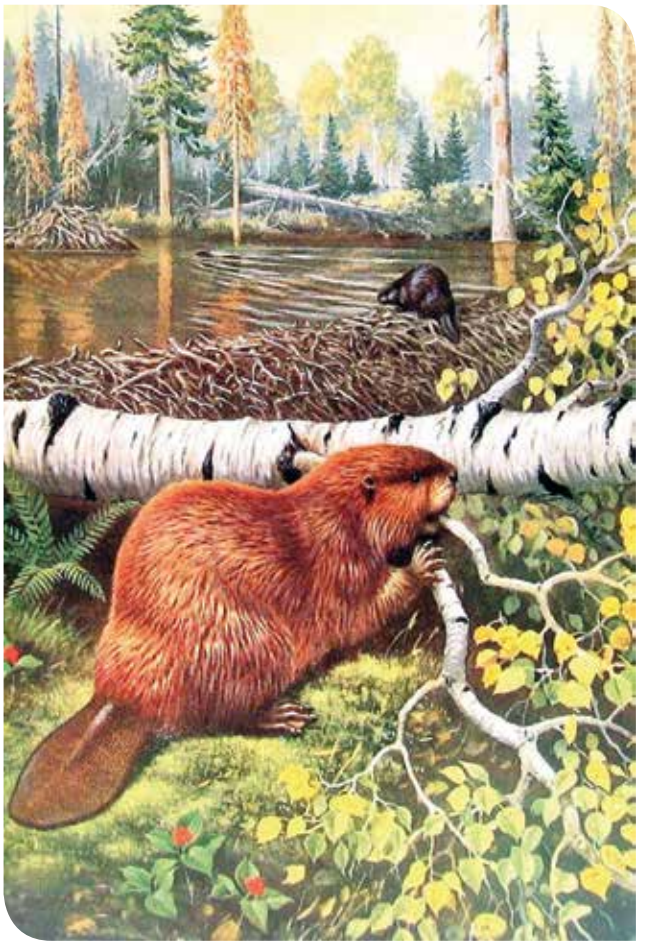

के समान तथा बहुत मजबूत होते हैं। इन दाँतों में उपस्थित एनैमल चाकू की धार के समान तेज होता है। जिसके द्वारा यह भोजन को कुतरने का कार्य करता है। इसकी दुम लम्बी, चपटी तथा पक्षी के समान होती है और एक पतवार का कार्य करती है। इसकी दुम पर शल्क भी होते हैं। पैरों में पाँच–पाँच अंगुलियाँ होती हैं और अंगुलियों पर नाखून होते हैं। पिछले पैरों की अंगुलियों में पादजाल भी होता है।

बीवर के शरीर की लम्बाई सिर से पूँछ तक एक मीटर होती है। पूँछ चौड़ी और चपटी तथा माथा गोल होता है। सिर और मुँह का भाग बेडौल दिखता है। अक्सर जल में रहने के कारण हाथ और पैरों के पंजे की उंगलियाँ बतख के पंजों की तरह खाल की झिल्ली से जुड़ी होती हैं। नथुने के ठीक नीचे होठ बीच से कटा हुआ होता है। शरीर मुलायम बालों वाली खाल से ढका रहता है। पीठ के बाल गाढ़े भूरे और चमकदार होते हैं। खाल की विशेषता यह होती है कि वह पानी में गोता लगाने पर भीगती नहीं। मुलायम बालों वाली खाल ठंड से रक्षा भी करती है।

बीवर के भांटे (बिल, सुरंग) नदियों, झीलों के किनारे होते हैं। भांटों में सुरंग की छोर पर बीवर के रहने और सोने के लिए पर्याप्त स्थान होता है। उसका निवास स्थान साफ–सुथरा होता है। उसे साफ–सुथरा रखने के लिए बीवर यत्न भी करता है। भांटे के दो मुँह होते हैं– एक जल के भीतर और दूसरा जल के बाहर। किसी संकट के समय बीवर जल के भीतर वाले मुख से भाग निकलता है।

नदियों में जब (बर्फ जम जाने से) जल का प्रवाह कम हो जाता है तो बीवर के भांटे का पानी वाला

द्वार खुल जाता है। ऐसी दशा में, इसे जल के अन्दर ही रखने के लिए बीवर नदी की धारा में बाँध बनाकर जल का स्तर ऊँचा कर लेता है। बाँध बनाने की कला ही बीवर की अद्‌भुत बुद्धि का परिचय देती है।

गर्मी के दिनों में इसे अपने आप पता चल जाता है कि नदी का पानी कम होने वाला है। इस कारण यह नदी में बांध बांधता है, जिससे पानी रूका रहे और कम होने न पाये। इस बांध को बनाने के लिए यह नदी के किनारे वाले वृक्षों के तनों को अपने मजबूत दाँतों से काटना आरम्भ करता है और कुतर–कुतरकर तने में गड्‌ढ़ा बनाता है। इस प्रकार के गड्‌ढ़ों को यह नदी की ओर गहरा करता रहता है, जिससे वृक्ष नदी की ओर ही गिरे। इस प्रकार नदी के किनारे के वृक्षों को यह गिराता है। इसके पश्चात् उन वृक्षों को काटता है, जो नदी से दूर होते हैं। गिरे वृक्षों को यह फिर एक–एक, दो–दो मीटर के टुकड़े काटता है। इसके पश्चात् इन कटे टुकड़ों की छाल उतारता है। यह छाल इसका भोजन है। नदी के किनारे के टुकड़ों को यह नदी में तैरा देता है और उन वृक्षों के टुकड़ों को जो नदी से दूर होते हैं, लाने के लिए लम्बी–लम्बी नालियां खोदता है। इन नालियों को यह नदी से जोड़ देता है और इनको इतनी गहरी करता है कि नदी का पानी इन नालियों में आ सके। फिर यह दूर पड़े लट्‌ठों को ठेल कर इन्हीं पानी से भरी नालियों में तैरा देता है और लट्‌ठे नदी में पहुँच जाते हैं।

शीत ऋतु के आरम्भ में ही जब नदियों के स्रोत बर्फ जमने से धीमे हो जाते हैं, बीवर अपने पैने दाँतों से काटकर वृक्षों व झाड़ियों की शाखाएँ एकत्र करता है। यह कार्य बीवर समूहों में करते हैं। किसी सुनसान क्षेत्र में बीसियों बीवरों को पूरे मनोयोग से कार्य करते देखा जा सकता है।

वृक्षों, झाड़ियों की शाखाएँ, रेशेदार घास और लताएँ नदी के उथले पेटे पर जमा की जाती हैं। बड़ी चतुराई और कौशल के साथ इन्हें परस्पर गूंथा जाता है। देखते–देखते (कुछ दिनों के ही परिश्रम से) नदी के आर–पार एक मजबूत जाल–सा खींच जाता है। इस जाल को स्थायित्व देने के लिए इसे

छोटे–बड़े पत्थरों की टेक दे दी जाती है। जाल इतना घना होता है कि जल की सतह उठ जाती है। इसके छिद्रों को मिट्टी, पत्तियों या जो कुछ भी काम दे सके, से बंद कर दिया जाता है। कभी–कभी तो मनुष्य की जांघ की मोटाई के वृक्षों के तने भी बाँध में लगा दिये जाते हैं। ऐसे मोटे वृक्षों को, (यदि वे नदी के तट से दूर उपलब्ध हों) नदी तक लाने के लिए बीवर छोटी–छोटी नहरें बना लेता है। बड़ी शाखाओं और तनों से छोटी शाखाएँ काटकर अलग कर दी जाती हैं जिससे उन्हें ले जाने में असुविधा न हो। काटने–छांटने का सारा काम बीवर अपने चमकदार पैने दाँतों से करता है। तारीफ की बात तो यह है कि बीवर अनावश्यक रूप से झाड़ियों की कटाई नहीं करता। वह छोटी छाँट दी गई टहनियों का भी उपयोग कर लेता है। इस तरह के बाँध यदि वे तेज बाढ़ से बच गये तो कई वर्षों तक चलते हैं।

बांध के अतिरिक्त ये इन्हीं लट्ठों द्वारा अपने मकान भी बाँध के निकट बनाते हैं। मकानों की संख्या अधिक होती है। ये अपने मकानों की छतों को नीचे से प्लास्टर भी करते हैं।

इनके मकानों को 'लॉज' कहते हैं। प्रत्येक मकान में माँ–बाप तथा बच्चे रहते हैं। बच्चे बड़े होने पर बाहर निकाल दिये जाते हैं और वे फिर अपना मकान अलग बना लेते हैं। बाँध तथा मकान बनाने का कार्य सब मिलकर करते हैं। उन्हें 'इंजीनियर' कहना उचित है। ❖

लिंकन का दृढ़-संकल्प

– नेहा नागपाल

लिंकन के नौजवानी के दिनों की घटना है। वह बहुत निर्धन थे लेकिन उनके अन्दर आगे बढ़ने, कुछ कर गुजरने की बड़ी ललक थी, कठिन संकल्प था।

एक बार उन्हें पता चला कि नदी के दूसरी ओर ओगमोन नामक गाँव में एक अवकाश प्राप्त न्यायाधीश रहते हैं, जिनके पास कानून की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। सो लिंकन कड़ाके की सर्दी के दिनों में उस बर्फीली नदी में नाव में बैठ गए। नाव वह स्वयं खे रहे थे। आधी नदी उन्होंने पार की होगी कि नाव एक बड़े बर्फ के टुकड़े से टकराकर क्षतिग्रस्त हो डूब गई। फिर भी साहस के धनी नौजवान लिंकन निराश नहीं हुए। उन्होंने बड़ी मुश्किल से तैरकर नदी पार की और जा पहुँचे रिटायर्ड जज के घर।

इत्तेफाक से उस समय जज का घरेलू नौकर भी नहीं था, सो लिंकन को जज के छोटे–मोटे काम भी करने पड़ते। वह जंगल से लकड़ियां बटोरकर लाते और घर में पानी भी भर कर लाते।

पारिश्रमिक के नाम पर उन्होंने सिर्फ एक ही इच्छा व्यक्त की कि वह जज की सारी किताबें पढ़ने भर को पा सके।

जज ने खुशी–खुशी उन्हें अपनी पुस्तकें पढ़ने का मौका दिया। संकल्प के धनी लिंकन आगे चलकर अमरीका के राष्ट्रीय जीवन में छाए रहे और देश के राष्ट्रपति के रूप में सर्वोच्च पद प्राप्त किया।

सच ही है–

'संकल्प हो तो आदमी क्या नहीं कर सकता।' ❖

हरी सब्जियां खाएं

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

आओ हरी सब्जियां खाएं,
पहलवान गामा बन जाएं।

मूली लाकर गाजर लाकर,
पालक हरी–हरी मंगवाकर,
लाल टमाटर लाल चुकन्दर,
खाएं शलजम को पकवाकर,
बथुआ चौलाई खाकर हम–
आयरन और विटामिन पाएं।

बनवाएं सोया–मेथी का,
साग जायकेदार सलोना,
आलू–गोभी मटर मिलाकर,
तरकारी हो एक भगौना,
लहसुन पड़ा साग सरसों का–
खाकर सर्दी दूर भगाएं।

भूल ना जाना

– महेन्द्र सिंह शेखावत

हरी–भरी सब्जी खाओगे,
स्वस्थ बच्चे कहलाओगे।
मीठी टॉफी यदि खाओगे,
दांत सड़े कीड़े पाओगे।।

भूल ना जाना मंजन–स्नान,
प्रातः उठ कर करो व्यायाम।
लक्ष्य पर हो नित अपना ध्यान,
बड़ों को भी करो नित प्रणाम।।

समय कभी न व्यर्थ खोना है,
देख कष्ट को ना रोना है।
कर्तव्य पथ पर चलना सदा,
सुपथ से विचलित न होना है।।

घड़े से निकला बच्चा

– सुरेश सौरभ

वैभव की छत पर बिल्ली के बच्चे खेल रहे थे। उनकी उछल–कूद और शरारत सुनकर वैभव छत पर आ गया। वैभव को देखकर फौरन सारे बच्चे, अपनी बिल्ली मम्मी के साथ भागे। तभी दीवार फाँदते वक्त एक बिल्ली का बच्चा छत पर रखे एक मिट्टी के बड़े खाली घड़े में गिर गया। अब मम्मी उसे देख फौरन रूक गई और अपने बच्चे को घड़े से निकालने का प्रयास करने लगी पर उसका प्रयास सफल न हो पा रहा था, बच्चा म्याऊँ–म्याऊँ करके बराबर रोये जा रहा था। जब सारे प्रयास करके बिल्ली हार गई तो बिल्ली ने रोते हुए वैभव से विनय की– भैया प्लीज! मेरे बच्चे को निकाल दो। मैं तुम्हें धन्यवाद दूँगी।

वैभव ने कहा – बिल्ली मौसी, मैं तुम्हारे बच्चे को तो निकाल दूँगा पर तुम्हें मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी।

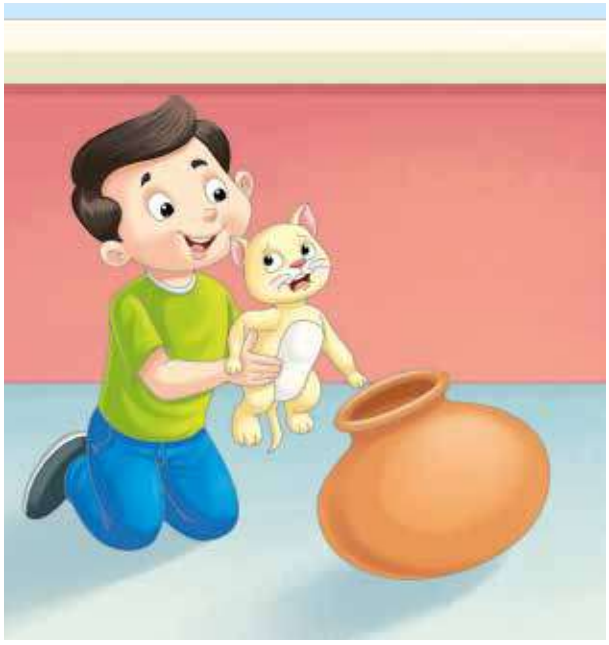

बिल्ली – जल्दी बताओ मुझे तुम्हारी हर शर्त मंजूर है।

वैभव – मुझे तुम्हारे बच्चे बड़े प्यारे लगते हैं। मैं कई दिनों से इनके साथ खेलना चाह रहा हूँ पर यह किसी भी कीमत पर हमारे हाथ नहीं आते?

बिल्ली – ठीक है मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है पर एक बात ध्यान रखना। एक माँ से उसका बच्चा जुदा न करना।

वैभव – तुम मुझ पर भरोसा कर सकती हो, मैं उसके साथ खेलकर उसे वापस कर दूँगा बिल्ली मौसी।

बिल्ली – तो ठीक है, जल्दी ही मेरे बच्चे को निकालो।

भागकर वैभव घड़े के पास आया। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न था। फौरन रो रहे बच्चे को, बड़े प्यार से घड़े से निकाला। फिर खूब दुलारने लगा। थोड़ी देर खेलने के बाद बच्चा अपनी गोद से उतारकर बिल्ली मौसी को सौंप दिया। बिल्ली ने ममता भरी आँखों से कहा– 'थैंक्यू भैया।' ❖

बुद्धि का कमाल

– अर्चना जैन

जापान में साबुन बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी को अपने एक ग्राहक से यह शिकायत मिली कि उसने साबुन का 'व्होल सेल पैक' खरीदा था पर उनमें से एक डिब्बा खाली निकला। कंपनी के अधिकारियों को जांच करने पर यह विदित हुआ कि असेम्बली लाईन में ही किसी गड़बड़ के कारण साबुन के कई डिब्बे भरे जाने से चूक गये थे।

कंपनी ने एक कुशल इंजीनियर को रोज पैक हो रहे हजारों डिब्बों में से खाली रह गये डिब्बों का पता लगाने के लिए तरीका ढूंढने के लिए निर्देश दिया। कुछ सोच–विचार करने के बाद इंजीनियर ने 'असेम्बली लाईन' पर एक हाई रिजोल्यूशन एक्स–रे मशीन लगाने के लिए कहा जिसे दो–तीन कारीगर मिलकर चलाते और एक आदमी मॉनीटर की स्क्रीन पर निकलते जा रहे डिब्बों पर नजर गड़ाए देखता रहता ताकि कोई खाली डिब्बा बड़े–बड़े बक्सों में नहीं चला जाए। उन्होंने ऐसी मशीन लगा भी ली पर सब कुछ इतनी तेजी से होता था कि वे भरसक प्रयास करने के बाद भी खाली डिब्बों का पता नहीं लगा पा रहे थे।

ऐसे में एक अदने से कारीगर ने कंपनी अधिकारियों को असेम्बली लाईन पर एक बड़ा–सा इंडस्ट्रियल पंखा लगाने के लिए कहा। जब फरफराते हुए पंखे के सामने से हर मिनट साबुन के सैकड़ों डिब्बे गुजरते तो उनमें मौजूद खाली डिब्बे उड़कर दूर चले जाते। इस तरह सभी की मुश्किलें पल भर में आसान हो गईं। ❖

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : पिंकी

मम्मी, आज शाम को मैं, मौली और चिंटू, मोंटू के घर पढ़ाई करने जा रहे हैं।
ठीक है, लेकिन तुम सब पढ़ाई करना, शरारत मत करना वरना पढ़ नहीं पाओगे।
हम सब आ गए, मोंटू।

किट्टी, चलो मिलकर पढ़ाई करते हैं। कोई शरारत नहीं करेगा।
मैं चिंटू की कॉपी छुपा देती हूँ। बड़ा मजा आएगा।
अरे, चिंटू तुम अपनी कॉपी नहीं लाए?
अरे, मैं तो अपनी कॉपी लाया था, कहाँ गई?

अरे, ढूँढ़ो कॉपी कहाँ गई?
चलो किट्टी घर चलो। अब बहुत देर हो गई है।
अरे! यह क्या? मैंने तो अपना होमवर्क भी नहीं किया।
अब तो मैडम से मार पड़ेगी। काश! मैं समय बरबाद न करके अपना काम कर लेती।

कभी न भूलो

संकलनकर्ता : जगतार 'चमन'

❖ विचारों की स्वतन्त्रता ही दुनिया की सबसे बड़ी आशा है। अतएव गुलामी चाहे राज्य की हो, धर्म की हो, रूढ़िवाद पालन की हो; उससे व्यक्ति और समाज को मुक्त करने का कर्तव्य ही बुद्धिजीवियों के सामने सबसे बड़ा कर्तव्य है।

– डॉ. राधाकृष्णन

❖ प्यार और सत्कार का मूल श्रोत ब्रह्मज्ञान है।

– निर्मल जोशी

❖ विद्या के साथ जीवन का आचरण करना ही विद्वता है।

– सरदार पटेल

❖ व्यस्त रहना जरूरी नहीं है क्योंकि व्यस्त तो चीटियां भी रहती हैं, खास बात तो यह है कि आप व्यस्त किस कार्य में है चलते रहना मायने नहीं रखता मकसद की दिशा में चलना जरूरी है।

– हेनरी डेविड थोरो

❖ अगर आप अपने आपसे मित्रता कर लें, तो आप कभी अकेला महसूस नहीं करेंगे।

– मैक्सवेल माल्टज

❖ कुएं में उतरने वाली बाल्टी यदि झुकती है तो भरकर बाहर आती है।

❖ जो व्यक्ति अपनी गलतियों के लिए स्वयं से लड़ता है, उसे कोई भी हरा नहीं सकता।

– चाणक्य

❖ जब तक तुम लोगों को भगवान और गुरु में, भक्ति तथा सच में विश्वास रहेगा, तब तक तुम्हें कोई भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

– स्वामी विवेकानन्द

❖ आपके सपने सच हो सकते हैं, अगर आपमें उन्हें पाने की कोशिश में लगे रहने का हौसला हो।

– वॉल्ट डिज्नी

❖ अनुभव का सबसे बड़ा शास्त्र मानव जीवन ही है।

❖ बुराई का सम्पर्क हमारी अच्छी आदतों को भी दूषित कर देता है।

– महाभारत

❖ नैतिक बल सब प्रकार के बलों से श्रेष्ठ है।

– पास्कल

❖ महान विचार जब कर्म में परिणित हो जाते हैं तो महान कार्य बन जाते हैं।

– हेजलिट

❖ जैसा इन्सान आपको बनना है, वैसा बनने की इच्छाशक्ति, लगन और हौसला ही सफलता की पहली सीढ़ी है।

–जॉर्ज शीहन

❖ जो दूसरे नहीं देख पाएं, उसे देख पाने की कला है दूरदर्शिता।

– जोनाथन स्विफ्ट

मानव की कहानी

– शिवचरण मंत्री

एक था नन्हा बंदर। बंदर का नाम था बंटी। बंटी बड़ा ही नटखट और चंचल था। एक जगह पर चुपचाप बैठे रहना बंटी को अच्छा नहीं लगता था। बंटी को एक जगह से दूसरी जगह कूदना, फुदकना अच्छा लगता था।

सर्दी का मौसम था। दोपहर का समय था। बंटी गाँव के एक पेड़ पर बैठे अपने शरीर को खुजला रहा था। यकायक उसकी नजर पेड़ की जड़ की तरफ पड़ी। उसे पेड़ के नीचे चींटियों की एक कतार दिखाई दी। उसने गौर से देखा कि चींटियां बड़ी ही अनुशासित होकर एक पंक्ति में चल रही हैं और प्रत्येक चींटी के मुँह में कुछ दबा हुआ है। चींटियां धीरे–धीरे एक दूसरी के पीछे एक विशेष दिशा में ही जा रही थीं।

बंटी चींटियों का यह माजरा देख चकित रह गया। अपनी उत्सुकता को शान्त करने को वह पेड़ से नीचे उतरा और जा पहुँचा चींटियों की पंक्ति के पास। वहाँ पहुँचकर उसने आगे बढ़ रही एक चींटी से पूछा– बहन, आपने अपने मुँह में क्या दबा रखा है और आप कहाँ जा रही हैं?

चींटी पंक्ति से एक ओर हटी और सहजता से बोली– बंदर भैया, हमारे मुँह में खाना है और हम अपने बिल की ओर जा रही हैं।

भी हम बिल में कुछ भोजन सुरक्षित रखती हैं।

–आप एक ही पंक्ति में बड़ी अनुशासित होकर कैसे चल लेती हो?

–हमारे शरीर में एक विशेष प्रकार की गंध निकलती है। इसी कारण हम एक ही पंक्ति में बड़ी अनुशासित होकर चलती हैं।– इतना कहकर चींटी आगे बढ़ गई और बंटी भी अब दूसरे पेड़ की शाखा पर बैठकर सुस्ताने लगा।

पेड़ पर बैठे–बैठे बंटी की नजर एक गिलहरी पर पड़ी। बंटी ने देखा कि गिलहरी के मुँह में एक मूंगफली का दाना है और वह किसी खास स्थान की ओर तेजी से बढ़ रही है। बंटी पेड़ से नीचे उतरा और गिलहरी के पास जा पहुँचा। उसने गिलहरी को रोका और पूछा– दीदी, आप अपने मुँह में यह दाना दबाकर कहाँ जा रही

–आप भोजन को बिल में क्यों ले जाती हो?

–वहाँ हमारे बच्चे, रानी चींटी और कई अन्य चींटियां रहती हैं। उनका खाना हम ही ले जाती हैं। बंदर भैया, इसके सिवाय हम बरसात, तूफान, प्राकृतिक विपदाओं व अन्य मुसीबत के समय के लिए

हैं?

–मैं यह दाना लेकर अपने कोटर में जा रही हूँ।

–क्यों?– बंटी ने आश्चर्य से अगला प्रश्न किया।

–कोटर में मेरे नन्हें–नन्हें प्यारे बच्चे हैं। उनको खिलाने के लिए मैं मूंगफली के दाने कोटर में एकत्रित करती हूँ। इसके सिवाय मुसीबत के समय जैसे बरसात आना, बीमार होने के कारण जब मैं बाहर नहीं जा सकती हूँ उस समय के लिए मैं खाने की चीजें और अन्य वस्तुएं अपने कोटर में एकत्रित करके रखती हूँ।

बंटी कोई दूसरा प्रश्न पूछता उससे पहले ही गिलहरी अपने कोटर की ओर बढ़ गई और बंटी मुँह लटकाकर पुनः पेड़ की शाखा पर जाकर बैठ गया।

शाखा पर बैठे–बैठे बंटी की नजर सामने फूलों से लदे पौधे पर जा ठहरी। उसने फूलों पर मंडराती एक मधुमक्खी देखी। वह तुरन्त पौधे के समीप पहुँचा और बोला– ओ मधुमक्खी बहन! आप इन फूलों पर बार–बार क्यों बैठ रही हो? आप बार–बार इनको सूंघकर उड़कर कहाँ जाती हो? इस तरह आप इन फूलों को क्यों बर्बाद कर रही हो?

–फूलों को नुकसान पहुँचाये बिना मैं इनसे मीठा रस चूसती हूँ जिसे मैं अपने छत्ते (घर) में इकट्ठा करती हूँ और मधु (शहद) बनाती हूँ।

–ओह! तो आप भी चींटी, गिलहरी की तरह भोजन का संग्रह करती हो?

–हाँ, तुमने ठीक ही कहा। मैं भी चींटी, गिलहरी आदि कुछ प्राणियों की तरह भोजन संग्रहित करके रखती हूँ ताकि आड़े वक्त (मुसीबत के समय) में बच्चों और मुझे भूख सहन न करनी पड़े।– मधु बहन इतना कहकर बंटी को शहद खाने का निमंत्रण देकर अपने मधु छत्ते की ओर चली गई। बंटी देखता ही रह गया।

शाम हुई। बंटी अपनी माँ के पास आया। माँ बरगद की एक शाखा पर बैठी सुस्ता रही थी। माँ ने बंटी से कुछ बातें की तो बंटी ने माँ से प्रश्न किया– माँ, चींटी जैसे नन्हें प्राणियों का भी घर होता हैं जिसे बिल कहते हैं। इसी प्रकार गिलहरी आदि के भी कोटर होता है। पर हम लोगों के चीजें संग्रह करने, बुरे समय से बचने के लिए घर क्यों नहीं होता है?

बंटी की बात सुनकर माँ ने हँसते हुए कहा– घर! संग्रह करने, आपातकाल के लिए घर! हमारे लिए तो बस पेड़ की शाखाएं ही घर है। हम तो इसी पर रहते आये हैं और रहेंगे। पर मैंने सुना है जिस बंदर प्रजाति ने पक्षियों, कीट पतंगों की तरह घर बनाना सीख लिया वे मानव बन गये।– इतना कहकर माँ फुदककर दूसरी शाखा पर जा बैठी। ❖

पर्यावरण और वृक्ष

– अंकुश्री

वृक्ष पर्यावरण की एक महत्वपूर्ण इकाई है। यह मनुष्य के लिये अति हितकारी है। इसलिये प्राचीन काल से ऋषि–मुनियों द्वारा वृक्षों को संरक्षण प्रदान किया गया है। इसके लिये कुछ वृक्षों की पूजा की परम्परा भी बनायी गयी थी। वृक्षों से वन, वन्यप्राणी, पहाड़, नदी, समुद्र, आकाश, हवा, पानी आदि सभी पर प्रभाव पड़ता है।

यहाँ एक बात समझना बहुत आवश्यक है। वन और वृक्ष में अंतर है। वन एक प्राकृतिक पद्धति है; जबकि वृक्ष एक इकाई है। वन के अंदर वृक्ष के अलावा झाड़ी, लता, घास, जानवर, पक्षी, नदी, नाला, पहाड़ आदि संपूर्ण प्राकृतिक संरचना रहती है या रह सकती है। वृक्ष पर कुछ पक्षियों का बसेरा हो सकता है। उस पर कुछ जानवर रह सकते हैं। वृक्ष कहीं भी लगाया जा सकता है इसलिये वृक्ष का भी काफी महत्व है।

वृक्ष से जलावन मिलता है। चारा मिलता है। दातौन मिलता है। कुछ विशेष प्रकार के वृक्ष की पत्तियों से पत्तल और दोना बनाये जाते हैं। कुछ वृक्षों से औषधि मिलती है। अनेक वृक्षों से फल मिलते हैं। कुछ वृक्षों से उपयोगी फूल और बीज भी मिलते हैं। महुआ और कचनार (कोयनार) उपयोगी फूल के और सखुआ, करंज, चिरौंची आदि उपयोगी बीज के उदाहारण हैं।

पर्यावरण की रक्षा में वृक्ष का उपयोग इतना ही नहीं है। कड़कती धूप में वृक्ष की छाया बड़ी उपयोगी होती है। कड़ी धूप में चलते हुए पथिक को वृक्ष की छांव की बेताबी से प्रतीक्षा रहती है। उनकी स्थिति 'होते वृक्ष तो मिलती छांव, पड़ गये छाले दुख गये पांव' की रहती है।

खेत में लगातार काम करने वाला किसान वृक्ष की छाया में थोड़ी देर विश्राम कर लेता है। कड़ी धूप में थकने के बाद वृक्ष की छांव में बैठने से उसे नई ऊर्जा मिल जाती है। वर्षा की बौछार से बचने में भी वृक्ष मददगार होता है। इसकी हरियाली से आँखों को राहत मिलती है। मन हरा–भरा हो जाता है।

वृक्ष आकाश में घूमते मतवाले बादल को रोकते हैं। इससे वर्षा होती है। बारिश की तरह गरमी और ठंड का पड़ना भी मौसम के अनुसार जरूरी है। यह अच्छे पर्यावरण की पहचान है।

पहाड़ के ऊपर तरह–तरह के वृक्ष पाये जाते हैं। बिना वृक्ष का पहाड़ नंगा–सा दिखता है। वृक्ष की जड़ें पहाड़ के अंदर घुसकर चट्टानों को खिसकने से रोके रखती हैं। बिना वृक्ष के ये चट्टानें नीचे गिर कर टूट जाती हैं।

टूटी हुई चट्टानें वर्षा और बर्फ के पानी के साथ नीचे गिरती हैं। गिरते–गिरते उनके टुकड़े छोटे होते जाते हैं। वे टुकड़े बहकर नदियों में चले जाते हैं। पहाड़ की चट्टानें खिसकने से वहाँ की मिट्टी बहकर नीचे आती है। वह मिट्टी भी नदियों में पहुँचती है। चट्टान के टुकड़ों और मिट्टी के कारण नदियां भर जाती हैं। इससे उनकी जलधारक क्षमता कम हो जाती है। पानी मैदानी क्षेत्रों में फैल जाता है। परिणामतः बाढ़ का प्रकोप हो जाता है। भरी हुई नदियां बरसात खत्म होते सूखने लगती हैं। इस तरह वृक्ष बाढ़ और सूखे दोनों से बचाव करता है।

वृक्षों के अभाव में धरती की उपजाऊ मिट्टी बह जाती है। इसे भू–क्षरण कहते हैं। इससे धरती

की उर्वरता खत्म हो जाती है। सतह भी पानी के बहाव के कारण उबर–खाबर हो जाती है। इससे बची हुई जमीन खेती लायक नहीं रह पाती।

मनुष्य या दूसरे जीव–जंतु सांस द्वारा कार्बन डाईआक्साइड गैस छोड़ते हैं। कल–कारखानों द्वारा भी तरह–तरह की गैसें छोड़ी जाती हैं। वृक्षों की हरी पत्तियां कार्बन डाईआक्साइड को आक्सीजन में बदल देती हैं। वृक्षों के कारण कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ने का असर समुद्र के तापमान पर पड़ता है। अत्यधिक कार्बन डाईआक्साइड से समुद्री जल खौलने लग सकता है। ऐसी स्थिति पर्यावरण के लिये अति घातक है। लेकिन वृक्ष पर्यावरण को इस घातक स्थिति में आने से रोकता है। वृक्ष के कारण आसपास का तापमान भी नियंत्रित रहता है।

पर्यावरण की रक्षा में वृक्ष की उपयोगिता को आर्थिक तौर पर भी आंका जा सकता है। कुछ वृक्षों की आयु सैंकड़ों वर्ष की होती है। लेकिन औसतन पचास वर्ष की आयु मानकर वृक्ष से मिलने वाले लाभ की गणना की जा सकती है। कुछ वृक्ष प्रत्यक्ष लाभ देते हैं तो कुछ गौण रूप में लाभ देते हैं जैसे एक वृक्ष पचास वर्ष में पाँच लाख रुपये का ऑक्सीजन देता है। वर्षा को सुनिश्चित और नमी को नियंत्रित कर यह छह लाख रुपये का लाभ पहुँचाता है। भू–क्षरण को रोककर और मिट्टी को उपजाऊ बनाकर अप्रत्यक्ष लाभ देता है। वैज्ञानिक आधार पर पर्यावरण की सबसे बड़ी प्रदूषण नियंत्रक इकाई वृक्ष ही हैं। ❖

पढ़ो और हँसो

पिता : बेटा, इस किताब में क्या पढ़ रहे हो?
पुत्र : पिताजी, बच्चों का पालन–पोषण कैसे किया जाता है। यह पढ़ रहा हूँ।
पिता : मगर बेटा, अभी तुम यह क्यों पढ़ रहे हो?
पुत्र : जी मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप मेरा पालन–पोषण ठीक से कर रहे हैं या नहीं।

टीचर होमवर्क क्यों नहीं किया?
गोलू : मैम, मैं जब पढ़ने बैठा तो लाइट चली गई।
टीचर : तो लाइट आने के बाद क्यों नहीं की पढ़ाई?
गोलू : बाद में मैंने इस डर से पढ़ने नहीं बैठा कि कहीं मेरी वजह से फिर से लाइट न चली जाए।

एक सीधा–सादा देहाती रेलवे स्टेशन की टिकट खिड़की पर जाकर बाबू से बोला– एक टिकट दीनदयाल का देना।

टिकट बाबू बड़ी देर तक स्टेशनों के नामों की सूची खोल कर देखते हुए परेशान होकर बोला– अरे, यह है कहाँ?
देहाती– बाबू जी, वह बाहर बेंच पर बैठा है।

चिंटू : (मिंटू से) बैठे–बैठे क्या सोच रहा है भाई?
मिंटू : यही कि जिसने पहली बार दही जमाया होगा, वो जामण कहाँ से लाया होगा?

मोनू की माँ की तबीयत खराब हुई। अस्पताल ले जाया गया।
डॉक्टर ने कहा– दो 'टेस्ट' होंगे।
मोनू यह सुनकर उदास हो गया और बोला– हे भगवान! अब क्या होगा, मेरी माँ तो अनपढ़ है।

कवि : आपको मेरी कविता पसन्द आई?
एक श्रोता : मुझे उसका अन्त सुन्दर लगा।
कवि : किस जगह?
श्रोता : जब आपने कहा कि कविता समाप्त हुई।

सोनिया : (नीतू से) मुझे कोई ऐसा उपाय बताओ कि मैं मोटी हो जाऊँ। सभी लोग मुझे सुकड़ी–सुकड़ी कहते हैं।
नीतू : वो जो तुम्हारी छत पर मधुमक्खियों का छत्ता है न। उसी में हाथ डाल दें। तू मोटी हो जायेगी।

– सोनी (खलीलाबाद)

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) आज तुम इतने दुखी क्यों हो?

दूसरा पड़ोसी : आज हमारे किरायेदार की साइकिल चोरी हो गई।

पहला पड़ोसी : पर इससे तुम्हें क्या लेना–देना?

दूसरा पड़ोसी : अरे कैसे नहीं लेना–देना, अब मैं राशन की दुकान से घर तक राशन किस पर रखकर लाऊँगा।

सब्जी बेचने वाले के घर पर बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहा– बधाई हो बच्चा कैसा है?

–एकदम ताजा है बहन जी!– सब्जी बेचने वाले ने कहा।

जज : आपको अपनी सफाई में क्या कहना है?

महिला : अब मैं क्या बोलूँ, मेरे यहाँ सफाई नौकरानी करती है इस बारे में तो वही ज्यादा अच्छी तरह बता सकती है।

राज : मेरा बेटा रातभर बुक पर बैठा रहा।

जीत : लेकिन फिर वो फेल क्यों हुआ?

राज : क्योंकि वह नेट की 'फेसबुक' पर बैठा था।

गृहिणी : (दूध वाले से) सुबह 6 बजे दूध देने आया करो।

दूधवाला : जल्दी नहीं आ सकता क्योंकि 6 बजे नल में पानी नहीं आता।

सेठ साहब : (नौकर से) श्यामू जरा यह बिजली का तार पकड़ना।

नौकर : (झटका लगने के बाद) मालिक इसमें तो करंट है।

सेठ साहब : ठीक है श्यामू मैंने यही मालूम करना था।

डॉक्टर : (मरीज से) दो गोलियाँ सुबह और दो गोलियाँ शाम को खानी हैं।

मरीज : गोलियाँ तो खा लूँगा डॉक्टर साहब। पर बन्दूक कहाँ से लाऊँगा।

– अर्चना विश्वकर्मा (खलीलाबाद)

स्वावलम्बी बालक

– डॉ. जयन्त निर्वाण

घटना 1910 ईस्वी की है। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक अमरीका में गये थे। तब वे सिएटल नगर में रह रहे थे। उस समय की घटना है। एक बार वे पोस्ट–ऑफिस से अपनी डाक लेकर लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक दस–बारह साल का बालक अखबार बेच रहा है। उस बालक ने उनसे भी अखबार खरीद लेने का आग्रह किया।

स्वामी सत्यदेव ने कहा, ''मुझे अखबार नहीं चाहिए।''

तब उस लड़के ने अपनी मधुर आवाज में कहा, ''केवल एक सेंट ज्यादा नहीं।''

इस पर सत्यदेव ने कहा कि नहीं मुझे अखबार की जरूरत नहीं है।

''कृपा करके अवश्य खरीदिए, एक सेंट की कोई बड़ी रकम नहीं है।'' उस भोले बालक के आग्रह को वे टाल नहीं सके और जेब से सेंट का सिक्का निकालकर उस बालक से अखबार खरीद लिया। लेकिन उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने उस बालक से पूछा, ''क्या तुम्हारे माता–पिता गरीब हैं?''

यह सुनकर वह बालक बड़ा विस्मित हुआ और उनसे बोला कि उन्होंने ऐसा क्यों पूछा?

स्वामी सत्यदेव ने कहा कि क्योंकि तुम इतनी छोटी उम्र में अखबार बेच रहे हो?

यह सुनना था कि उस बालक ने उनसे पूछा, ''क्या अखबार बेचने वाले गरीब होते हैं?''

उन्होंने खिसियाकर कहा, ''नहीं मेरा मतलब यह नहीं था लेकिन तुम इतनी छोटी उम्र में अभी से अखबार बेचने लग गये हो।

यह सुनकर उस बालक ने उनकी ओर बड़ी हैरानी से देखा और फिर बड़े जोश से बोला, ''देखिए मिस्टर, मेरे माता–पिता गरीब नहीं हैं। लेकिन मैं अपने पिता के सहारे नहीं रहना चाहता। ये जो कपड़े मैं पहने हूँ, मेरे स्वयं के खरीदे हुए हैं और जो खर्चा मुझे चाहिए, वह मैं अपने परिश्रम से कमाता हूँ। मेरे पास पचास डालर बैंक में हैं। उस स्वाभिमानी बालक की यह गौरवभरी आत्मविश्वासपूर्ण बात सुनकर वे आश्चर्यचकित रह गये और अपने मन में भारत के बालकों की तुलना करने में चिन्तनशील हो गये। हठात् उनके मुँह से निकला, ''धन्य है, यह स्वावलम्बी बालक स्वावलम्बन का पुजारी' और वे अपनी राह पर चल पड़े। ❖

तारे

– अमृत 'हरमन'

नील गगन में टिम टिम करते,
कितने प्यारे लगते तारे।

आसमान में मिल कर देखो,
सदियों से रहते हैं सारे।

एक–दूजे से कभी न लड़ते,
कभी न धक्का–मुक्की मारे।

यूं लगता है कि मानव को,
कुछ समझाते हैं बेचारे।

गर हम मिलकर रह सकते हैं,
तुम भी मिलकर रह लो प्यारे।

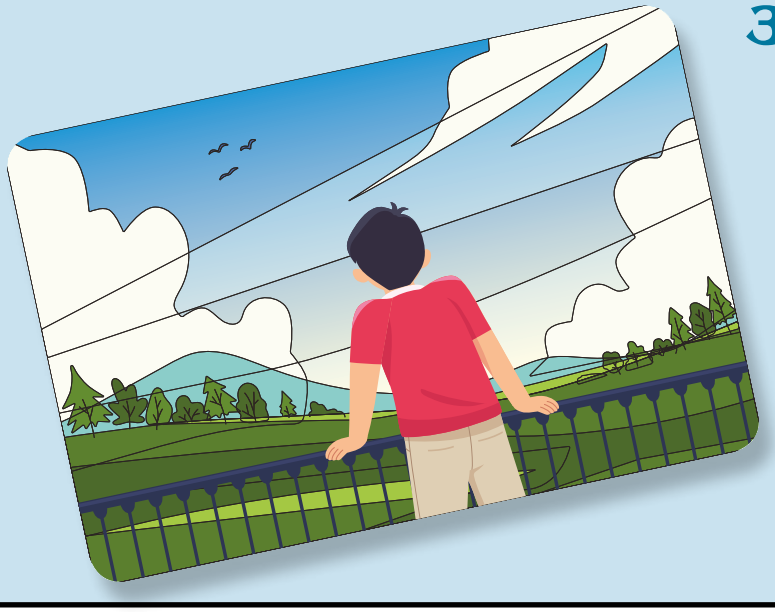

आसमान से

– रंजना चौधरी

आसमान में उड़ते बादल,
उड़ते–उड़ते आते।
बड़ी दूर से आते हैं वे,
बड़ी दूर को जाते।।

साथ न जाने कितना पानी,
देखो वे भर लाते।
उड़ते–उड़ते आते हैं वे,
धरती को नहलाते।।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। हमें हँसती दुनिया का बेसब्री से इंतजार रहता है। हँसती दुनिया को मैं खुद भी पढ़ती हूँ तथा अपने मित्रों को भी पढ़वाती हूँ। इसमें कहानियाँ तथा प्रेरक–प्रसंग शिक्षाप्रद होते हैं।

– शालू राय (घड़सी)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। यह पत्रिका शिक्षाप्रद तथा बुद्धिवर्द्धक है।

मई अंक में 'एक बूँद की कीमत', 'महाराणा की प्रतिज्ञा' तथा 'तीन बातें' कहानियाँ प्रेरणादायक हैं।

– पायल (राजकोट)

हमारे अंकल हँसती दुनिया के पुराने सदस्य हैं और हम सबको पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। मैं और मेरा छोटा भाई इसे बड़े आनंद के साथ पढ़ते रहते हैं। पत्रिका से हमें ज्ञानवर्द्धक कहानियाँ, कविताएँ व 'अनमोल वचन' से ज्ञान भरी प्यारी–प्यारी जानकारियाँ व ढेर सारे प्रेरक–प्रंसक तथा सच्ची प्रेरणा से ओत–प्रोत व लाजवाब कहानियाँ पढ़ने को मिलती हैं।

इसके अलावा बाल कविताएँ भी शिक्षाप्रद होती हैं।

– विनोद व जय बिल्दानी (बड़नेरा)

हँसती दुनिया का जुलाई अंक पढ़ा। इसमें 'सबसे पहले' बहुत पसन्द आया।

इस अंक की कहानियों में 'देश का बेटा', 'बरगद की मौत' एवं 'कौए की समझदारी' ये सब कहानियाँ बहुत शिक्षाप्रद लगीं।

मैं हँसती दुनिया का धन्यवाद करना चाहती हूँ कि आप हमें अच्छी शिक्षा और ज्ञान के साथ–साथ शरीर स्वस्थ रखने के लिए अनेक जानकारियाँ देते रहते हैं। जो बहुत लाभदायक होती हैं।

– अंजलि अमृतपाल (परतवाड़ा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित सदस्य हूँ। इसमें 'कभी न भूलो' तथा 'अनमोल वचन' शिक्षाप्रद होते हैं।

– दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

हमें हँसती दुनिया बहुत पसन्द है। इसका हमें हर महीने ही बेसब्री से इन्तजार रहता है। यह हमारे ज्ञान में वृद्धि के अलावा हमारा मनोरंजन भी करती है। हम इसे स्वयं पढ़कर फिर कहानियाँ, कविताएँ एवं चुटकुले अपने दोस्तों को भी सुनाते हैं।

हमने हँसती दुनिया के लिए अपने दिल की भावना को एक कविता के रूप में भी प्रस्तुत है–

बच्चो के दिल को लुभाती है हँसती दुनिया।
सबका मनोरंजन भी करती है हँसती दुनिया।
सबको हँसाती भी है हँसती दुनिया।
ज्ञान भी बढ़ाती है, हँसती दुनिया।
हर तरह से अच्छी है हँसती दुनिया।
तभी तो हमें पसन्द है हँसती दुनिया।
पढ़ते ही दिल में बस जाती है हँसती दुनिया।
किताब ही नहीं एक अनमोल खजाना है हँसती दुनिया।
बनी रहे ये सदा हमारे बीच बनके 'हँसती दुनिया'।

– ज्योति, निलम व देवेन्द्र शर्मा (हनुमानगढ़)

जुलाई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. ऐंजल निरंकारी 11 वर्ष
   ऐंजल प्लाईवुड, ब्रह्मपुरी रोड,
   देसाईगंज, जिला : गढ़चिरौली (महाराष्ट्र)

2. सिम्मी शर्मा 13 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी,
   एफ. सी. आई. गोदाम,
   गोधरा (गुजरात)

3. हीर कलवानी 11 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी,
   एफ. सी. आई. गोदाम,
   गोधरा (गुजरात)

4. नक्ष सेठी 10 वर्ष
   499, गुरु नानक नगरी, गली नं. 7,
   वार्ड नं. 27, मलोट (पंजाब)

5. नैतिक बेलानी 13 वर्ष
   3772–ई, किसान कालोनी,
   वैशाली नगर, अजमेर (राज.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

मिशिका शर्मा (शास्त्री नगर, पठानकोट), रिद्धि सैनी (राजनगर, नई दिल्ली), सुकृति अरोड़ा (हरी नगर, दिल्ली), आरुषि शर्मा (सेक्टर–56, चंडीगढ़), आन्या कामरा (करनाल), तारुश सेठी (मलोट), अविनाश कुमार, रितिका गुप्ता, प्रज्ञा, राज, पवन, मनीष कुमार (मोतिहारी), कृषा तोलानी, यशिका देवजानी, हर्निता, मंथन पंजवानी, कृष लालवानी, भूमि खिमानी, प्रीत कलवानी, दक्ष पंजाली, परी, प्रेरणा असनानी, नमन, धैर्य मोटवनी, आरूही, यश भोजवानी, जेनी, हियान्स बसरानी, नम्या, कुंज बुधवानी, परी, पीयूष समियानी, हनिशा, भविका, देव रामचंदानी, मोक्ष, निहारिका अडवानी, रैना, मीत बलवानी, कमल, परी, कार्तिक, कियारा केशवानी, लव मूलचंदानी, प्रितराज, माही राठौड़ (गोधरा)।

सितम्बर अंक रंग भरो

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 सितम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) नवम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

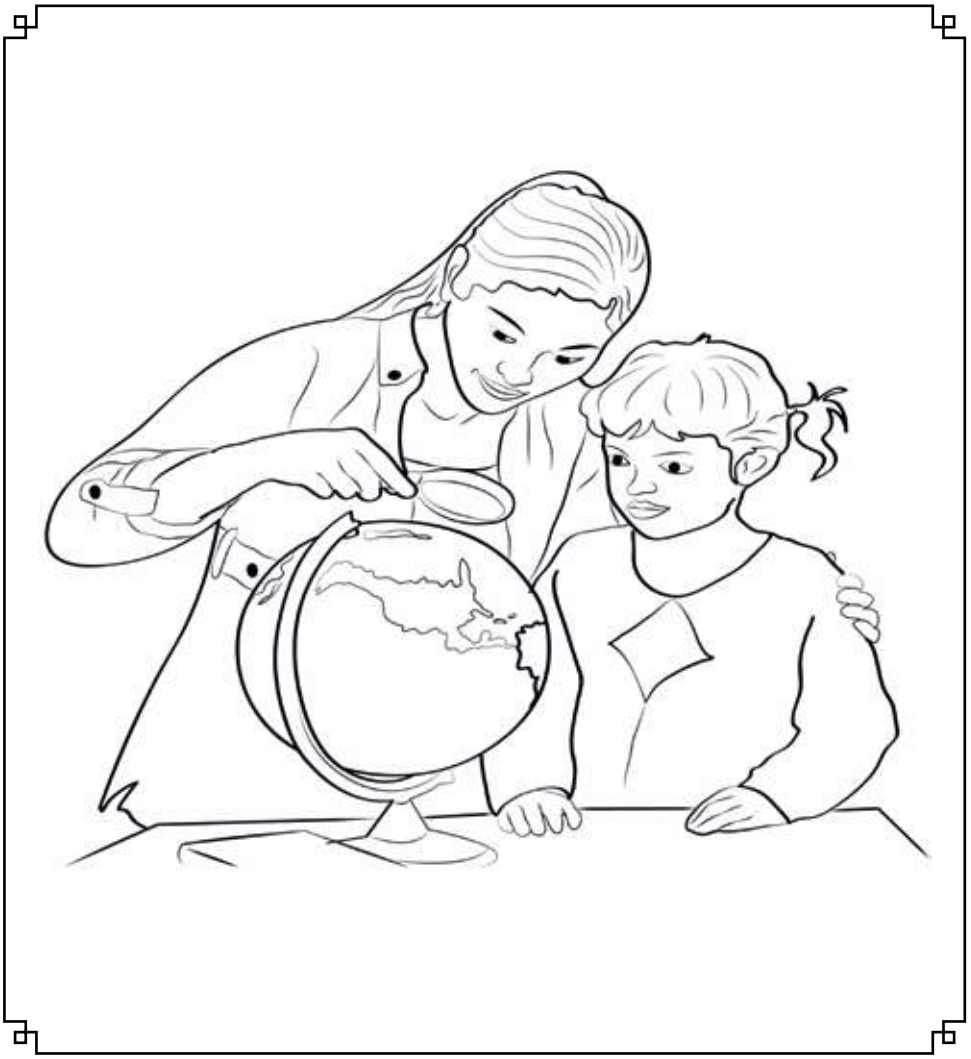

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

Nirankari Radio

radio.nirankari.org

24x7

Kids Divine

ek ruhani muskaan

kids.nirankari.org

Catch the latest episode on 23rd of every month

IT'S LIVE, DOWNLOAD NOW

NEWS DIVINE

www.nirankari.org

Catch the latest episode on 10th of every month

सुनो तराने नए पुराने

Nirankari Radio

Bhakti Sangeet

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 20th of every month

महफ़िल ए रूहानियत

Mehfil-E-Ruhaniyat

Special programme

Voice DIVINE

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 1st & 16th of every month

SV

SOUL VIBES

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on Last Friday of every month

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed

Customer Care : **9818883394**